घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com **अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 296- शुक्रवार 28- अगस्त 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये** RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

नेपाल बाढ़ में मरने वालों का आंकड़ा 259 पहुंचा,288 भारतीय समेत 1500 लापता

विदेश मंत्रालय बोला...200 भारतीय संपर्क में है तिब्बत में फंसे हुए...

काठमांडू,27 अगस्त 2026। नेपाल में भीषण बाढ़ के बाद एक और बड़ी बाढ़ का खतरा पैदा हो गया है। चीन ने बताया है कि रसुवागढ़ी बॉर्डर से 18 किमी ऊपर ल्हेंदे नदी में पानी रुकने से झील बनी है। पानी बढ़ रहा है और झील टूटने का खतरा है। नेपाल के जल तथा मौसम विज्ञान विभाग ने भोटेकोशी के निचले इलाकों में लोगों को नदी किनारे से दूर रहने और सुरक्षित जगह जाने की सलाह दी है। झील करीब 0.11 वर्ग किमी में फैली है। इसके टूटने पर भोटेकोशी में फिर तेज बाढ़ आ सकती है। बाढ़ में अब तक 359 लोगों की मौत हो चुकी है। 8 जिलों से शव मिले हैं,जिनमें सबसे ज्यादा चितवन में 132 और पूर्वी नवलपरासी में 82 हैं। करीब 1,500 लोग लापता बताए जा रहे हैं। इनमें 288 भारतीय भी शामिल हैं। वहीं, 21 भारतीयों को बचाया गया है,जिनमें 11 की पहचान हो चुकी है। नेपाल के बाढ़ प्रभावित नुवाकोट और रसुवा में 500 सोलर पावर बैंक भेजे गए हैं। इन सोलर पावर बैंकों का इस्तेमाल मोबाइल फोन चार्ज करने और 4-5 बिजली की लाइटें चलाने के लिए किया जा सकता है। आपदा से बिजली सप्लाई प्रभावित होने वाले इलाकों में इनसे जरूरी रोशनी और संचार सुविधाएं बनाए रखने में मदद मिलेगी।

न्यूयॉर्क मेयर ममदानी ने नेपाल-तिब्बत बाढ़ पर दुःख जताया

न्यूयॉर्क के मेयर जोहरान क्वामे ममदानी ने नेपाल-तिब्बत सीमा पर आई भीषण बाढ़ में हुई मौतों पर दुख जताया। उन्होंने कहा कि बाढ़ में सैकड़ों लोगों की जान गई है और लापता लोगों की तलाश जारी है। ममदानी ने न्यूयॉर्क में रहने वाले नेपाली और तिब्बती समुदाय के प्रति संवेदना जताते हुए कहा कि वे इस मुश्किल समय में अकेले नहीं हैं। उन्होंने कहा कि न्यूयॉर्क उनके साथ खड़ा है।

विदेश मंत्रालय बोला... 21 भारतीयों को सुरक्षित निकाला गया

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि भारत नेपाल में फ्लैश फ्लड से पैदा हुई स्थिति से निपटने के लिए हरसंभव मदद जारी रखेगा। उन्होंने बताया कि बाढ़ में फंसे 21 भारतीयों को अब तक सुरक्षित निकाला गया है। ये सभी तमिलनाडु के हैं। भारत नेपाल की मांग के आधार पर राहत सामग्री और बेली ब्रिज भेज रहा है। विदेश मंत्रालय ने 24 घंटे काम करने वाला कंट्रोल रूम बनाया है। काठमांडू और बीजिंग स्थित भारतीय दूतावासों में भी 24 घंटे की हेल्पलाइन शुरू की गई है। जायसवाल ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल के प्रधानमंत्री से फोन पर बात कर संवेदना जताई और हरसंभव मदद का भरोसा दिया है।

नेपाल की मदद के लिए भारत बैली ब्रिज भेजेगा

नेपाल में बाढ़ से टूटे रास्तों और पुलों को फिर से जोड़ने के लिए भारत बैली ब्रिज भेजेगा। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, यह एक पोर्टेबल और पहले से तैयार किया जा सकने वाला पुल है, जिसे जरूरत वाली जगह पर जल्दी लगाया जा सकता है। बाढ़ या भूस्खलन में जब कोई पुल टूट जाता है, तो बैली ब्रिज कम समय में रोड कनेक्टिविटी को बहाल करने में मदद करता है। इसे जरूरत के मुताबिक दूसरी जगह भी ले जाकर लगाया जा सकता है।

नेपाल ने 20 अरब रुपये जुटाए, विश्व बैंक से मांगेगी 25 अरब

नेपाल सरकार ने भीषण बाढ़ से हुए नुकसान से निपटने के लिए तुरंत 20 अरब नेपाली रुपये (1,250 करोड़) जुटाने का फैसला किया है। यह रकम प्रधानमंत्री राहत कोष, गृह मंत्रालय और दूसरे स्रोतों से जरूरत के मुताबिक उपलब्ध कराई जाएगी। इसके अलावा सरकार विश्व बैंक से करीब 25 अरब नेपाली रुपये (1,562.5 करोड़) की मदद लेने की तैयारी कर रही है। इसके लिए जरूरी प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

रेस्क्यू में 13 हजार से ज्यादा सुरक्षाकर्मी तैनात

बाढ़ और भूस्खलन प्रभावित इलाकों में 13,295 सुरक्षाकर्मी राहत और बचाव कार्य में तैनात किए गए हैं। इनमें नेपाल पुलिस के 7250, नेपाली सेना के 4200 और सशस्त्र पुलिस बल के 1845 जवान शामिल हैं। बाढ़ और भूस्खलन से सड़कें प्रभावित होने के कारण टीमें पैदल और हेलिकॉप्टर से रेस्क्यू कर रही हैं। नेपाली सेना और निजी हेलिकॉप्टरों ने अब तक 69 उड़ानें भरकर 351 लोगों को सुरक्षित निकाला है।

मणिपुर : अंधाधुंध गोलीबारी में 4 लोगों की मौत,इलाके में हड़कंप

नई दिल्ली,27 अगस्त 2026। मणिपुर के कांगपोकपी में गुरुवार की सुबह एक बार फिर हिंसा भड़क उठी। इम्फाल-तामेंगलॉन्ग रोड पर स्थित गांवों के पास अज्ञात शस्त्रधारियों ने अचानक हमला कर दिया। इस अंधाधुंध गोलीबारी में नागा समुदाय के चार आम नागरिकों की मौत हो गई, जबकि एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल है। हिंसा के बाद से एक ग्रामीण लापता भी बताया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक, ये घटना सुबह करीब 8:30 बजे मकुई आशांग और थानम्बा नागा गांवों के बीच घटी। ये इलाका ढ्वङ्ग रोड के किनारे बसे नागा गांवों के लिए आवाजाही की लाइफलाइन माना जाता है। घटना के तुरंत बाद इलाके में दोनों तरफ से रुक-रुक कर भारी गोलाबारी की खबरें भी सामने आईं। गोलीबारी में जान गंवाने वाले चारों लोग नागा समुदाय से जुड़े सामाजिक और शैक्षणिक चेहरे थे।

रक्षाबंधन की पूर्णिमा पर लगेगा आंशिक चंद्र ग्रहण,तांबे जैसा लाल दिखाई देगा चांद

भोपाल,27 अगस्त 2026। खगोल विज्ञान में रुचि रखने वाले लोगों के लिए 28 अगस्त का दिन बेहद खास होने जा रहा है। इस दिन सावन मास की पूर्णिमा पर जब पूरा देश रक्षाबंधन मना रहा होगा, तब अंतरिक्ष में एक गहरा आंशिक चंद्र ग्रहण (डीप पार्शियल लुनर इकलिप्स) लगेगा, जिसमें चंद्रमा का 96.3 फीसदी हिस्सा पृथ्वी की घनी छाया में छिप जाएगा और वह तांबे जैसा लाल दिखाई देगा। मध्य प्रदेश की नेशनल अवार्ड प्राप्त खगोल विज्ञान प्रसारक सारिका घारू ने गुरुवार को इस खगोलीय के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय समयानुसार यह घटना सुबह के समय घटित होगी, जब भारत में चंद्रमा क्षितिज से नीचे रहेगा। यही कारण है कि यह चंद्र ग्रहण भारत में बिल्कुल भी दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका, पश्चिमी यूरोप, पश्चिम अफ्रीका और अटलांटिक के कुछ भागों में देखा जा सकेगा। सारिका ने बताया कि जब सूर्य और चंद्रमा के बीच पृथ्वी इस स्थिति में आती है कि पृथ्वी की गहरी छाया चंद्रमा को पूरी तरह नहीं ढंक पाती है,बल्कि आंशिक भाग को ढंकती है तो चंद्रमा का गहरी छाया से ढंका भाग ग्रहणग्रस्त दिखाई देता है। इसे आंशिक चंद्र ग्रहण या पार्शियल लुनर इकलिप्स कहते हैं। उन्होंने बताया कि एक गणितीय अनुमान के अनुसार, रक्षाबंधन में लगने वाले चंद्र ग्रहण को विश्व की लगभग 41 प्रतिशत जनसंख्या देख सकेगी।

आंध्र प्रदेश में बस और ऑटो-रिक्शा की टक्कर..7 की मौत,6 जने घायल

पलनाडु,27 अगस्त 2026। आंध्र प्रदेश के पलनाडु जिले में गुरुवार को एक बस ने ऑटो-रिक्शा को टक्कर मार दी। हादसे में 7 लोगों की मौत हो गई, जबकि 6 अन्य घायल हुए हैं। घायलों में 4 बच्चे भी शामिल हैं। पुलिस ने यह जानकारी दी। हादसा चिलकलूरिपेट मंडल के अड्डा रोड के पास हुआ। बस विजयवाड़ा से तिरुपति जा रही थी, तभी उसने 15 यात्रियों को लेकर जा रहे ऑटो-रिक्शा को टक्कर मार दी। पुलिस के मुताबिक, ऑटो-रिक्शा सड़क के गलत तरफ मुड़कर बस के रास्ते में आ गया था। उस समय बस करीब 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही थी। नरसारावपेट के डीएसपी एम. हनुमंत राव के मुताबिक, हादसा रात करीब 1 बजे हुआ। तिरुपति जा रही बस एक यात्री को लेने के लिए चिलकलूरिपेट के पास बाईपास पहुंची थी। यात्री को लेने के बाद बस नरसारावपेट बस स्टैंड की ओर जा रही थी। इसी दौरान कला मंदिर जंक्शन के पास बस की ऑटो-रिक्शा से टक्कर हो गई। हादसे में चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीन अन्य ने अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

कानपुर में विमान क्रैश...पायलट और ट्रेनी की मौत

प्लेन में अचानक धमाका हुआ,फिर नीचे गिरा,दोनों बाहर नहीं निकल पाए

कानपुर,27 अगस्त 2026। यूपी के कानपुर में ट्रेनिंग विमान क्रैश हो गया। हादसे में पायलट और ट्रेनी की मौत हो गई। विमान ने गुरुवार सुबह 11:30 बजे उड़ान भरी थी। 11:50 बजे यानी उड़ान के महज 20 मिनट बाद गंगा बैराज के पास 5 फीट ऊंची बाउंड्री वॉल से टकराकर खेत में जा गिरा। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, विमान करीब 200-250 फीट ऊपर था। तभी अचानक हवा में डगमगाया और क्षतिग्रस्त हो गया। नीचे गिरते ही पूरा विमान टूटकर बिखर गया। पुर्जे दूर तक बिखर गए। हालांकि, विमान में आग नहीं लगी। हादसे से जुड़े वीडियो सामने आए हैं। इनमें दिख रहा है कि जमीन में गिरने के बाद विमान मलबे में तब्दील हो गया। एक पायलट कॉकपिट के पास फंसा था। दूसरा गंभीर हालत में विमान से थोड़ी दूर खून से लथपथ पड़ा था। विमान की एक सीट भी टूटकर बाहर आ गई। करीब 12:15 बजे पुलिस-प्रशासन की टीम पहुंची। खून से लथपथ पायलट सचिन भाटिया (गुजरात) और ट्रेनी अभिषेक पुजारी (कर्नाटक) को अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। डॉक्टरों के मुताबिक, दोनों पायलट की मौत ऊंचाई से गिरने की वजह से हुई। शरीर में मल्टीपल इंजरी हैं। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में स्पष्ट वजह सामने आएगी। मौके पर पहुंचे कानपुर पुलिस कमिश्नर रघुबीर लाल ने कहा- चकेरी स्थित गर्ग एविएशन ट्रेनिंग सेंटर से विमान ने उड़ान भरी थी। 20 मिनट बाद 39 किमी दूर नाथपुरवा गांव में क्रैश हो गया। पायलट के पास 3000 घंटे उड़ान का अनुभव था। डीजीसीए को जानकारी दे दी गई है। अब उनकी टीम जांच-पड़ताल करेगी।

प्रत्यक्षदर्शी बोले...धमाके के साथ गिरा विमान

नाथपुरवा गांव के रोहित निषाद ने बताया...मैं खेत पर काम कर रहा था। ऊपर देखा तो एक एयरक्राफ्ट उड़ रहा था। अचानक वह नीचे की ओर गिरने लगा। धमाके की आवाज के साथ जमीन पर गिरा। हालांकि, आग नहीं लगी। सर्वेश ने बताया- मेरे खेत में ही विमान गिरा। मैं सुबह 10 बजे तक यहीं था। फिर घर चला गया। बाद में फोन आया कि तुम्हारे खेत में विमान गिरा है। इसके बाद मैं भागकर आया। यहां देखा तो दोनों पायलट जमीन पर गिरे पड़े थे।

1 किमी. की दूरी पर है रिहायशी बस्ती

जहां हादसा हुआ, वहां से रिहायशी बस्ती करीब एक किमी दूर है। ग्रामीणों ने बताया कि विमान करीब 4-5 मिनट तक हवा में उड़ता रहा। फिर अचानक गिरा। अगर बस्ती के ऊपर विमान गिरता, तो घरों और पब्लिक को नुकसान पहुंच सकता था। विमान कानपुर की कंपनी गर्ग एविएशन फ्लाइंग ट्रेनिंग एकेडमी का था। 1995 में इसकी स्थापना हुई थी।

परिसीमन के मुद्दे पर प्रधानमंत्री को कांग्रेस अध्यक्ष का पत्र सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग

नई दिल्ली,27 अगस्त 2026। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर परिसीमन के प्रस्तावों पर सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग की। उन्होंने कहा कि यह देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दा है इसलिए इसे जल्दबाजी या जबरदस्ती पारित कराने की कोशिश नहीं होनी चाहिए। कांग्रेस अधयक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने गुरुवार को लिखे पत्र में कहा कि कांग्रेस का स्पष्ट रुख है कि लोकसभा की मौजूदा सदस्य संख्या 543 अगले 25 वर्षों तक बनी रहे, राज्यों के अनुसार मौजूदा प्रतिनिधित्व बरकरार रखा जाए और साल 2029 के लोकसभा चुनाव से महिलाओं के लिए एक-तिहाई आरक्षण लागू किया जाए। खरगे ने कहा कि उन्होंने 16 जुलाई को भी प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर आग्रह किया था कि परिसीमन के प्रस्तावों पर संसद के किसी विशेष सत्र में पेश करने से पहले सभी राजनीतिक दलों को पर्याप्त समय दिया जाए। अब यह अनुरोध इसलिए दोहराना पड़ रहा है क्योंकि केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री ने हाल ही में एक टेलीविजन साक्षात्कार में संकेत दिया है कि संसद का विशेष सत्र बुलाया जा सकता है। इसी वजह से मानसून सत्र के सत्रावसान में लगातार देरी हो रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री से अपील की परिसीमन के संबंध में चर्चा के लिए सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए और सभी राजनीतिक दलों व राज्य सरकारों को अध्ययन के लिए पर्याप्त समय दिया जाए।

ओलंपिक खेलों में भागीदारी बढ़ानी होगी अभी से खिलाड़ी तैयार करें : पीएम मोदी

खेलो इंडिया डायलॉग में कहा...युवाओं को स्क्रीन से ज्यादा प्लेग्राउंड चाहिए

नई दिल्ली,27 अगस्त 2026। पीएम मोदी ने गुरुवार को 1,500 से ज्यादा जगहों पर युवाओं और खिलाड़ियों से वर्चुअल संवाद किया। उन्होंने कहा कि ओलंपिक के 20 से ज्यादा खेलों में भारत की भागीदारी नहीं रही। ओलंपिक में भारत की भागीदारी बढ़ानी होगी। 2036 ओलंपिक के लिए अभी से खिलाड़ी तैयार करें। मोदी ने कहा- 15 अगस्त को देश के सामने स्पोर्ट्स विजन रखा। यह सिर्फ मेडल जीतने तक सीमित नहीं है, बल्कि विकसित भारत और देश की खेल शक्ति बढ़ाने का अभियान है। पीएम ने कहा- मैं हमेशा कहता हूं- जो खेले, वो खिले। आज युवाओं को स्क्रीन से ज्यादा स्पोर्ट्स सेंटर और प्लेग्राउंड चाहिए।

पीएम के संवाद की बड़ी बातें...

- **नेशनल स्पोर्ट्स डे और मेजर ध्यानचंद पर-** 29 अगस्त को नेशनल स्पोर्ट्स डे मनाया जाता है। यह महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद को याद करने का दिन है। करीब 100 साल पहले भारतीय सेना की हॉकी टीम न्यूजीलैंड गई थी, जिसमें ध्यानचंद भी शामिल थे। भारत-न्यूजीलैंड संबंधों को आज और मजबूत किया जा रहा है।
- **ओलंपिक में नए खेलों पर-** देश के हर जिले में खेल प्रतिभाएं हैं। ओलिंपिक के 20 से ज्यादा खेलों में भारत की भागीदारी नहीं रही है, जबकि दूसरे देश मेडल जीत रहे हैं। भारत को नए खेलों में भी आगे बढ़ना होगा। लंबी समुद्री तटरेखा के बावजूद सर्फिंग में भारत अभी पीछे है।
- **खेलो इंडिया संवाद पर-** सरकार मजबूत स्पोर्ट्स इकोसिस्टम बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। खेलो इंडिया संवाद में युवा खेल, गवर्नेंस और विकसित भारत पर सुझाव दे सकेंगे। उनके विचार देश को आगे बढ़ाएंगे।
- **स्पोर्ट्समैन स्पिरिट पर-** स्वस्थ समाज और मजबूत परिवार के लिए स्पोर्ट्समैन स्पिरिट जरूरी है। खेल हमें चैंपियन के साथ बेहतर प्रतियोगी बनना सिखाते हैं। पैरा एथलीट्स की सफलता समाज और परिवारों में नई उम्मीद जगाती है।

संपादकीय

विकास का असली रास्ता गांव की चौपाल से होकर गुजरता है...

भारत के विकास की चर्चा अक्सर बड़े शहरों,बड़े उद्योगों और बड़े प्रोजेक्टों के इर्द-गिर्द होती है। लेकिन भारत की असली तस्वीर आज भी गांवों में बसती है। खेत की मेड़ पर खड़ा किसान,रोजगार की तलाश करता श्रमिक,पानी के लिए संघर्ष करती महिलाएं,स्कूल जाती बेटियां और गांव की टूटी सड़क से गुजरता आम नागरिक–यही वह भारत है,जिसके विकास के बिना 'विकसित भारत' का सपना अधूरा रहेगा। इसलिए सरगुजा की ग्राम पंचायतों में हुआ जन संवाद-2.0 महज एक सरकारी कार्यक्रम नहीं,बल्कि इस बात की परीक्षा भी है कि विकास की योजनाओं में गांव की आवाज को कितना स्थान मिलता है। जिले की सभी ग्राम पंचायतों में विशेष ग्राम सभाओं के माध्यम से ग्रामीणों से गांव की प्राथमिकताएं पूछना एक अच्छी पहल है।'मेरे गांव की प्राथमिकता वोटिंग वॉल'पर ग्रामीणों द्वारा तालाब,आंगनबाड़ी भवन,तालाब गहरीकरण,सीसी रोड,नाली और खेल मैदान जैसी जरूरतों को सामने रखना यह बताता है कि गांव की विकास की प्राथमिकताएं किसी फाइल में बैठे अधिकारी से बेहतर गांव का नागरिक जानता है।

आखिर जिस रास्ते से रोज ग्रामीण गुजरता है,उसकी खराब हालत का दर्द उसे ही सबसे पहले महसूस होता है। जिस तालाब पर गांव की निर्भरता है,उसके गहरीकरण की जरूरत भी वही बेहतर समझता है। जिस मोहल्ले में नाली नहीं है,वहां जलभराव की परेशानी भी वहां रहने वाला परिवार ही जानता है। इसलिए विकास की प्राथमिकताएं तय करने में जनता की भागीदारी केवल लोकतांत्रिक औपचारिकता नहीं,बल्कि योजनाओं की सफलता की पहली शर्त है।

लेकिन यहीं से असली सवाल भी शुरू होता है...

क्या ग्रामीणों द्वारा बताई गई प्राथमिकताएं वास्तव में योजनाओं का हिस्सा बनेंगी? यदि वोटिंग वॉल पर लिखी मांगें कुछ दिनों बाद किसी रजिस्टर में दबकर रह गईं तो पूरा आयोजन भी दूसरे सरकारी आयोजनों की तरह औपचारिकता बन जाएगा। जन संवाद की सफलता मंच,रैली या शपथ में नहीं,बल्कि इस बात में मापी जानी चाहिए कि ग्रामीणों ने जो मांगा,उसमें से कितना जमीन पर उतरा। ग्राम सभा भारतीय लोकतंत्र की सबसे जमीनी संस्था है। संसद और विधानसभा की अपनी भूमिका है,लेकिन गांव की वास्तविक जरूरतों को समझने के लिए ग्राम सभा से बेहतर मंच शायद ही कोई हो। इसलिए ग्राम सभा को केवल योजनाओं की जानकारी देने या अधिकारियों की उपस्थिति दर्ज कराने का माध्यम बनाने के बजाय उसे निर्णय लेने की जीवंत संस्था बनाना होगा।

'जनता पूछे-पंचायत बताए'जैसे संवाद की जरूरत भी इसी कारण महत्वपूर्ण है। जॉब कार्ड,आवास,पेंशन और दूसरी योजनाओं को लेकर ग्रामीणों के मन में अक्सर सवाल होते हैं। कई बार समस्या योजना की कमी नहीं,बल्कि जानकारी के अभाव की होती है। यदि पंचायत स्तर पर ग्रामीणों को सीधे सवाल पूछने और समय पर जवाब पाने का अवसर मिले तो इससे पारदर्शिता और भरोसा दोनों बढ़ सकते हैं।

लेकिन जवाब केवल मौखिक नहीं होना चाहिए। यदि किसी ग्रामीण ने आवास के लिए आवेदन किया है तो उसकी स्थिति क्या है,पेंशन क्यों रुकी है,जॉब कार्ड में रोजगार क्यों नहीं मिला–इन सवालों का जवाब रिकॉर्ड के साथ और समयसीमा के साथ मिलना चाहिए। सुशासन का अर्थ केवल जवाब देना नहीं,जवाबदेही तय करना भी है।

'125 दिन रोजगार-मेरा अधिकार' की शपथ भी तभी सार्थक होगी, जब रोजगार की मांग करने वाले ग्रामीण को वास्तव में समय पर काम मिले और मजदूरी का भुगतान निर्धारित अवधि में हो। ग्रामीण भारत में रोजगार केवल आय का साधन नहीं, बल्कि परिवार की आर्थिक सुरक्षा का आधार है। इसलिए रोजगार के अधिकार की जानकारी देना जरूरी है, लेकिन उससे ज्यादा जरूरी है कि उस अधिकार को जमीन पर महसूस कराया जाए।

विकसित गांव की परिकल्पना भी केवल सड़क और भवन तक सीमित नहीं हो सकती। ग्रामीणों द्वारा संदेश कार्ड में शिक्षा,स्वास्थ्य,पेयजल, स्वच्छता और रोजगार जैसे विषयों को प्राथमिकता देना बताता है कि गांव अब केवल बुनियादी निर्माण नहीं, बेहतर जीवन की गुणवत्ता चाहता है। गांव में सड़क हो,लेकिन अस्पताल तक पहुंचने में घंटों लगें तो विकास अधूरा है। स्कूल हो,लेकिन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा न मिले तो विकास अधूरा है। नल लग जाए,लेकिन पानी नियमित न आए तो योजना अधूरी है।

इसलिए 'विकसित भारत' की शुरुआत 'विकसित गांव' से करनी होगी और विकसित गांव की शुरुआत गांव की वास्तविक जरूरत को समझने से होगी। तिरंगा रैली और विकसित भारत का संकल्प निश्चित रूप से उत्साह पैदा करते हैं। लेकिन तिरंगे के साथ लिया गया संकल्प तब ज्यादा मजबूत होगा, जब उसी गांव की सड़क सुधरेगी,तालाब में पानी ठहरेगा,स्कूल में बच्चे नियमित पढ़ेंगे,पंचायत कार्यालय में ग्रामीण को चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे और श्रमिक को उसकी मजदूरी समय पर मिलेगी। सरगुजा जैसे जिले में यह पहल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां विकास की चुनौतियां हर गांव में एक जैसी नहीं हैं। कहीं सड़क प्राथमिकता हो सकती है,कहीं पेयजल, कहीं सिंचाई,कहीं रोजगार तो कहीं शिक्षा और स्वास्थ्य। इसलिए एक ही ढांचे की योजना हर गांव पर थोपने के बजाय स्थानीय जरूरत के आधार पर विकास की दिशा तय करना अधिक प्रभावी होगा।

जन संवाद-2.0 ने कम से कम एक महत्वपूर्ण संदेश जरूर दिया है...गांव के विकास पर गांव के लोगों से बात की जानी चाहिए।

अब अगली जिम्मेदारी प्रशासन और पंचायत व्यवस्था की है कि इस संवाद को दस्तावेज से धरातल तक पहुंचाया जाए। ग्राम सभाओं में दर्ज प्राथमिकताओं की सूची सार्वजनिक हो,प्राथमिकता के आधार पर कार्य तय हों, बजट की उपलब्धता बताई जाए और यह भी स्पष्ट किया जाए कि कौन-सा काम कब तक होगा। इससे जनता केवल मांग करने वाली नहीं,बल्कि विकास की निगरानी करने वाली शक्ति भी बनेगी।

क्योंकि लोकतंत्र में जनता से संवाद केवल चुनाव के समय नहीं होना चाहिए। लोकतंत्र की असली खूबसूरती तब है, जब सरकार जनता की बात सुने और जनता सरकार के काम का हिसाब पूछ सके।

जन संवाद तभी सफल होगा,जब संवाद के बाद कार्रवाई दिखाई दे।

गांव की दीवार पर लिखी प्राथमिकता अगर सरकारी फाइल तक पहुंची, फाइल से बजट तक पहुंची और बजट से जमीन तक पहुंची...तभी विकसित भारत का संकल्प सार्थक होगा।

आखिर विकसित भारत की सबसे मजबूत नींव किसी राजधानी में नहीं, गांव की चौपाल पर रखी जाएगी। और उस चौपाल पर बैठा ग्रामीण केवल लाभार्थी नहीं–वह विकास का सबसे महत्वपूर्ण भागीदार है।

राखी के धागों में बुनी प्रार्थनाएँ

भाई-बहन के रिश्ते की मिठास,बदलते समय और रक्षा बंधन से जुड़ी बढ़ी हुई जिम्मेदारी....

प्रकाशार्थ: दैनिक घटती-घटना

डॉ.सत्यवान सौरभ
भिवानी,हरियाणा

रक्षा बंधन भारतीय संस्कृति का एक ऐसा त्योहार है जो सबसे अंतरंग होता है। यह सिर्फ भाई की कलाई पर राखी बांधने और उसे मिठाई खिलाने का दिन नहीं है,बल्कि यह भाई-बहनों के बीच प्यार, विश्वास,यादों और आजीवन मित्रता का दिन है। राखी सिर्फ एक धागा है जिसके भीतर बचपन से लेकर वर्तमान प्रेम और बेहतर भविष्य की आशाओं तक कई भावनाएं समाई होती हैं। बहन द्वारा राखी बांधना सिर्फ सुरक्षा की प्रार्थना ही नहीं है, बल्कि उनके बंधन का प्रतीक भी है। वह मौन रूप से भाई की खुशी,कुशल मंगल,स्वास्थ्य और सफलता के लिए प्रार्थना कर रही होती है। बदले में, भाई जीवन के विभिन्न पड़ावों पर अपनी बहन का सहारा बनने का कर्तव्य निभाता है।

भाई-बहन के रिश्ते में अक्सर शुरुआती दौर में थोड़ी-बहुत नोकझोक होती है, जो धीरे-धीरे जीवन के सबसे गहरे भावनात्मक बंधनों में से एक बन जाती है। बच्चों के मामले में,खिलौनों, मिठाइयों या किसी भी चीज़ को लेकर होने वाली छोटी-छोटी नोकझोंक ही अनमोल यादें बन जाती हैं। जैसे-जैसे भाई-बहन बड़े होते हैं, वे अपनी पढ़ाई, नौकरी की तलाश,शादी और परिवार में व्यस्त हो जाते हैं। कुछ दूसरे शहरों या दूसरे देशों में चले जाते हैं। भले ही दोनों के बीच दूरी बढ़ जाए,लेकिन भावनात्मक जुड़ाव भी उतना ही गहरा हो जाता है। रक्षा बंधन इसी बंधन को याद रखने और फिर से जीवंत करने का एक ज़रिया है।

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में रक्षा बंधन के महत्व को व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझना आवश्यक है। परिवार छोटे होते जा रहे हैं और संयुक्त परिवारों की जगह अब मोहल्ले में फैले परिवार ले चुके हैं। भाई-बहन दूर-दूर रहते हैं और साल भर में शायद ही कभी मिल पाते हैं। ऐसे में राखी सिर्फ कलाई तक पहुंचने वाला धागा नहीं है;यह एक भावनात्मक धागा है जो दूरियों को पाटता है। राखी के साथ भावना वही रहती है,चाहे वह डाक से मिले या वीडियो कॉल के माध्यम से मनाई जाए...अपने प्रियजन की खुशहाली और सुख-शांति के लिए प्रार्थना।

लेकिन बदलाव के साथ,भाई का अपनी बहन के प्रति दायित्व क्या है, इस पर पुनर्विचार करना आवश्यक है। सुरक्षा का अर्थ केवल आपात स्थिति में उसके साथ खड़े रहना नहीं है। इसमें उसकी गरिमा, स्वतंत्रता,विकल्पों और अधिकारों का सम्मान करना भी शामिल है। यह कहना कि सुरक्षा के लिए बहन की स्वतंत्रता को सीमित करना आवश्यक है,सुरक्षा नहीं, बल्कि नियंत्रण है। एक अच्छा भाई वह होता है जो अपनी बहन की क्षमताओं पर विश्वास करता है,उसे पढ़ाई करने,अपने करियर का ध्यान रखने,अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने और अपने जीवन के बारे में स्वयं निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

आज की महिलाएं शिक्षा,विज्ञान, प्रशासन,राजनीति आदि क्षेत्रों,सशस्त्र सेवाओं,खेल,व्यवसाय,कला और अन्य सभी क्षेत्रों में अपनी क्षमता साबित कर रही हैं। एक भाई अपनी बहन को इस दुनिया में जो सबसे अच्छी चीज दे सकता है, वह है आत्मविश्वास। उसे यही करना चाहिए,उसका सहारा बनना चाहिए और उसकी उपलब्धियों को उसकी और उसके परिवार की उपलब्धि के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

राखी बांधना और भाई की दीर्घायु की कामना करना मात्र नहीं है,बहन की ज़िम्मेदारी सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं होनी चाहिए। भाई-बहन का रिश्ता देखभाल,सहयोग और संवेदनशीलता का रिश्ता है। बहन भाई को भावनात्मक सहारा दे सकती है जब वह किसी परेशानी में हो,और भाई बहन को सहारा दे सकता है जब वह किसी परेशानी में हो। जीवन की कठिनाइयों में भावनात्मक सहायता कभी-कभी आर्थिक सहायता से कहीं अधिक फायदेमंद साबित होती है। किसी के लिए,मैं तुम्हारे साथ हूँ कहना ही सबसे कठिन समय का सामना करने का साहस देने के लिए काफी होता है।

रक्षा बंधन पारिवारिक संवाद के विकास का जायजा लेने का भी एक अवसर है। तकनीक ने लोगों के बीच की दूरियों को कम कर दिया है,लेकिन कई बार इसने एक ही मेज पर बैठे लोगों के बीच भी दूरी पैदा कर दी है। परिवार फोन और सोशल मीडिया के माध्यम से संपर्क में तो रह पाते हैं, लेकिन सार्थक बातचीत में ज्यादा समय नहीं व्यतीत होता। त्योहार हमें याद दिलाते हैं कि रिश्ते संदेशों, तस्वीरों और इमोजी से कायम नहीं रह सकते। उन्हें समय,सुनना,समझना और सुख-दुःख में साथ देना चाहिए।

राखी का धागा उन लोगों के लिए विशेष भावनात्मक महत्व रखता है जिन्होंने अपने भाई या बहन को खो दिया है। कुछ लोगों के लिए यह हंसी और उत्सव का दिन होता है, तो कुछ के लिए यह यादों और खामोश आंसुओं का दिन। जिन बहनों के भाई घर से दूर,यहां तक कि देश की सीमाओं पर भी सेवा कर रहे हैं, उनके मन में स्नेह और देशभक्ति की भावना का एक विशेष मिश्रण होता है। इसी प्रकार,जो भाई-बहन परिस्थितियों वश अलग हो गए हैं,वे भले ही कभी मिल न पाएं,लेकिन राखी उन्हें यह संदेश देती है कि चिंता न करें,उन्हें एक-दूसरे के प्रति अपना प्यार नहीं भूलना चाहिए।

अफसोस की बात है कि आजकल त्योहारों में भी उपभोक्तावाद हावी होता जा रहा है। राखी का महत्व,उपहारों का आदान-प्रदान और इसे मनाने की होड़ अक्सर आशीर्वाद से ज़्यादा बाधा बन जाती है। प्रेम एक खूबसूरत चीज़ है,इसे उपहारों के ज़रिए बेहतरीन तरीके से व्यक्त किया जा सकता है,लेकिन रिश्ते की कीमत उपहार में नहीं होती। उसके लिए भाई का सम्मान,विश्वास,समय और भावनात्मक सहारा किसी महंगे उपहार से कहीं ज़्यादा मूल्यवान है। इसी तरह,एक बहन का प्यार और मुश्किल समय में उसका सहारा भाई के लिए अनमोल होता है।

यह आवश्यक है कि पूरे वर्ष ऐसा वातावरण स्थापित किया जाए जहाँ प्रत्येक लड़की सुरक्षित,स्वतंत्र और सम्मानित महसूस करे। महिलाओं के सम्मान की शुरुआत परिवार से ही होनी चाहिए,जो धीरे-धीरे एक सामाजिक मूल्य में परिवर्तित हो जाए। बच्चों को स्वस्थ संबंधों के मूल मूल्यों के रूप में समानता,सहानुभूति,सहमति और सम्मान का महत्व छोटी उम्र से ही सीखना चाहिए।

इस लिहाज से,रक्षा बंधन सिर्फ भाई की कलाई पर धागा बांधने का दिन नहीं है। यह रिश्तों की ज़रूरतों को समझने और उन्हें पूरा करने का एक अवसर है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि प्यार अधिकार जताने की भावना नहीं, बल्कि विश्वास की भावना है;सुरक्षा नियंत्रण की भावना नहीं, बल्कि सम्मान की भावना है;और रिश्ता खून के रिश्ते से नहीं,बल्कि सहानुभूति,समझ और आपसी सहयोग से मज़बूत होता है।

लेकिन राखी सिर्फ कलाई पर बंधी एक डोरी से कहीं बढ़कर होती है, है ना? यह बचपन की मस्ती,मां के नैतिक मूल्यों,बहन की प्रार्थना,भाई के वादे और परिवार की खुशियों की उम्मीदों को समेटे रखती है। यही कारण है कि यह छोटी सी डोरी हजारों मील दूर भी महत्वहीन हो जाती है। प्रेम और विश्वास के बिना राखी सिर्फ कलाई पर बंधी एक डोरी नहीं है; यह एक ऐसा धागा है जिसमें दो दिलों को जोड़ने की क्षमता होती है।

सावन,भुजरिया और राखी का पर्व

अमृत की बूँदें ले आया,पावन सावन का यह मास,हरियाली सजी धरा पर,जागा अनुपम विश्वास।
शिव चरणों में शीश झुकाए,गूँज रहा बम भोले नाम,प्रकृति और परमात्मा के,मिलन का यह अद्भुत धाम।
अंकुरित गेहूँ की कोंपल,सजी भुजरिया पावन धाम,अन्नपूर्णा की कृपा बरसे,हर घर-आँगन में सुख-शाम।
रिश्तों में मिठास घोलती, लोक-संस्कृति की यह धार,सुख,समृद्धि, खुशहाली का लाती सुंदर यह उपहार।
सावन की पूर्णिमा चमकी आया रक्षाबंधन का त्योहार,
रेशम के धागों में बाँधा, भाई-बहन का निश्छल प्यार।
रक्षा का संकल्प जगाता,यह पावन अटूट अति विश्वास,स्नेह की डोर से सदा बँधी रहे,
हर बहन-भाई कीआस।
श्रावण मास की महिमा और सनातन संस्कृति की दिव्यता,हमारी आस्था का अमर स्पंदन
यह मास भाई-बहन के पवित्र प्रेम और अटूट विश्वास के प्रतीक का पर्व

प्रकाशार्थ: दैनिक घटती-घटना

सनातन संस्कृति में काल गणना केवल समय का बोध नहीं है,बल्कि यह प्रकृति और परमात्मा के बीच के गहन तादात्म्य का उत्सव है। इन उत्सवधर्मी महीनों में श्रावण मास(सावन का महीना) का स्थान सर्वोपरि और अत्यंत पावन माना गया है। यह मास केवल एक ऋतु का परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह जीवात्मा और परमात्मा के मिलन,प्रकृति के पुनरुद्धार और हमारी शाश्वत आस्था का जीवंत प्रतीक है।

प्रकृति का शृंगार और सृजन का उल्लास

श्रावण मास का आगमन ग्रीष्म ऋतु की तपन से त्रस्त धरती पर अमृत वर्षा लेकर आता है। जब आषाढ़ की उमस के बाद आसमान बादलों से घिरता है और मूसलाधार वर्षा होती है,तब प्रकृति मानो नई देह धारण कर लेती है।

चतुर्दिक हरियाली,सूखी और बंजर भूमि पर दूब और घास की चादर बिछ जाती है,वृक्षों पर नए कोपले फूटते हैं और कल-कल करती नदियाँ उफान पर होती हैं। पंचतत्वों का संतुलन,यह मास हमें यह सिखाता है कि जिस प्रकार वर्षा प्रकृति की पिपासा को शांत कर उसमें नया जीवन फूंकती है,उसी प्रकार भक्ति की वर्षा हमारे अंतःकरण को सींचकर जीवन को ऊर्जावान बनाती है। देवाधिदेव महादेव को समर्पित परम पवित्र मास

हिंदू पंचांग के अनुसार श्रावण मास भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। ऐसी पौराणिक मान्यता है कि इसी मास में माता पार्वती ने शिवजी को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की थी और भोलेनाथ ने उनकी मनोकामना पूर्ण की थी।

महामृत्युंजय और रुद्राभिषेक,इस पूरे मास में देवाधिदेव महादेव की आराधना का विशेष महत्व है। शिवालयों में ॐ नमः शिवाय के मंत्र गूंजते हैं और बेलपत्र,धतूरा,भांग तथा गंगाजल से भगवान का रुद्राभिषेक किया जाता है।

सावन सोमवार का व्रत,हर सोमवार को रखे जाने वाले व्रत साधक को मानसिक शांति,संयम और अदम्य साहस प्रदान करते हैं। यह व्रत वासनाओं और विकारों पर नियंत्रण का संदेश देता है।

कांवड़ यात्रा,अटूट विश्वास और समर्पण की पराकाष्ठा

श्रावण मास की दिव्यता का सबसे विहंगम दृश्य देश के विभिन्न भागों में दिखाई देने वाली कांवड़ यात्रा है। भगवा वस्त्र धारण किए,नंगे पाँव मीलों की पैदल यात्रा करते हुए शिव भक्तों (कांवड़ियों) का यह समूह सनातन आस्था का सबसे प्रेरणादायक स्वरूप है।

कंठ में बम-बम भोले का उद्घोष और कंधे पर गंगाजल से भरे कांवड़ को उठाए ये भक्त बिना थके अपनी मंजिल की ओर बढ़ते हैं।

यह यात्रा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है,बल्कि यह समर्पण,अनुशासन, और कठिन परिस्थितियों में भी ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम,की जीवंत मिसाल है।

हमारी संस्कृति के उत्सव और लोक-पर्व सावन का महीना केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है,बल्कि यह सामाजिक समरसता और लोक-संस्कृति का भी महाकुंभ है।

नाग पंचमी,प्रकृति के हर जीव के प्रति करुणा का भाव रखते हुए नाग देवता की पूजा की जाती है।

श्रावणी पूर्णिमा (रक्षा बंधन),यह मास भाई-बहन के पवित्र प्रेम और अटूट विश्वास के प्रतीक पर्व रक्षा बंधन के साथ संपन्न होता है,जो सामाजिक बंधनों और कर्तव्यों की याद दिलाता है।

सावन के गीत और झूले,महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले कजरी,मल्हार और पेड़ों पर डाले जाने वाले झूले हमारी लोक-संस्कृति की जीवंतता और उल्लास के परिचायक हैं।

श्रावण मास हमें यह सिखाता है कि जीवन में कितनी भी बाधाएँ और तपिश क्यों न आएँ,आस्था और प्रेम की फुहार हर संकट को पार करने की शक्ति देती है। यह मास हमारी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने,आंतरिक शुद्धि प्राप्त करने और प्रकृति के साथ एकाकार होने का स्वर्णिम अवसर है। भगवान भोलेनाथ की कृपा से यह पावन मास हम सबके जीवन में सुख, शांति, आरोग्य और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करे,यही सनातन संस्कृति की मूल प्रार्थना है।

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़
हरदा,मध्यप्रदेश

राखी : भाई-बहिनी के तिहार

अशोक कुमार यादव
मुंगेली,
छत्तीसगढ़

धरसा तोर जोहत हवंव,
आँसू डबडबागे आँखी।
आवत होही मोर बहिनी ह,
बाँधे ल मोला राखी।।
नान्हेपन म खेलेन-कूदेन,
करेन हम हँसी-ठिठोली।
काबर मोर ले दुरिहा चलदे,
टोरके मया के डोरी।।
शोर-पता नइ आवय तोर,
नइ आवय चिट्ठी-पाती।
आवत होही मोर बहिनी ह,
बाँधे ल मोला राखी।।
धुकुर-धुकुर जिवरा करथे,
घेरी-बेरी आवथे सुरता।
तोर बिना मन नइ लागय,
मँय होगे हँव तोरे पुरता।।
सबके बहिनी मन आगें,
थारी म बरगे दीया-बाती।
आवत होही मोर बहिनी ह,
बाँधे ल मोला राखी।।
झन भूलाबे मोला तँय ह,
मोर मयारू दुलौरिन दीदी।
संग हमर कभू मत छुटय,
जिनगी भर मरती-जीती।।
बिहनिया ले अगोरत हँव,
अब पहावय झन सँझाती।
आवत होही मोर बहिनी ह,
बाँधे ल मोला राखी।।
बजार ले मोर बर लाबे राखी
अउ लाबे केरा,मिठई।
आरती उतारके टीका लगाबे,
राखी पहिराबे कलई।।
हर बछर तोर मानगुन करहूँ,
हर बिपत ह हर जाही।
आवत होही मोर बहिनी ह,
बाँधे ल मोला राखी।।

यूपीआई : जेब से दुनिया तक

न जेब में सिक्कों की खनक,
न नोटों की कोई कतार,
मोबाइल उठाया,पिन लगाया,
पल में हुआ कारोबार।
दस वर्ष पहले जो सपना था,
आज वही पहचान बना,
छोटे चायवाले तक पहुँचा,
डिजिटल हिंदुस्तान बना।
न बैंक की लंबी लाइन रही,
न ही छुट्टे का झंझट भारी,
एक क्लिक में भुगतान हुआ,
आसाँ हुई दुनिया सारी।
कभी पैसे भेजना मुश्किल था,
अब पल में पहुँच जाता,
दूर खड़ा अपना इंसान भी
मोबाइल से पास हो जाता।
बाजारों से लेकर गलियों तक,
इसकी गूँज सुनाई देती,
भारत की डिजिटल ताकत,
दुनिया को राह दिखाती।
तकनीक तब ही महान है,
जब जन-जन के काम आए,
यूपीआई की यह छोटी-सी धारा
देश को आगे ले जाए।
नोट से डिजिटल सफर तक,
बदला भुगतान का संसार,
दस साल की यात्रा ने बढ़ाया
भारत का गौरव अपार।
कल जो थी कल्पना कभी,आज
हकीकत बनकर आई,
मोबाइल की लघु स्क्रीन ने भारत की
तस्वीर बदलवाई।

संजय एम तराणेकर
इन्दौर मध्य प्रदेश

उपहारों में नहीं,रिश्तों के अनमोल विश्वास में है राखी का मोल

रिश्तों की पवित्रता और सुरक्षा के संकल्प का पर्व रक्षाबंधन

योगेश कुमार गोयल
नजफगढ़,नई दिल्ली

रक्षाबंधन पर्व रक्षा के तात्पर्य से बांधने वाला एक ऐसा सूत्र है,जिसमें बहनें अपने भाईयों के माथे पर तिलक लगाकर जीवन के हर संघर्ष तथा मोर्चे पर उनके सफल होने तथा निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहने की ईश्वर से प्रार्थना करती हैं तथा उनके सुखद जीवन के लिए मंगलकामना करती हैं। भाई इस कच्चे धागे के बदले अपनी बहनों की हर प्रकार की विपत्ति से रक्षा करने का वचन देते हैं और उनके शील एवं मर्यादा की रक्षा करने का संकल्प लेते हैं। वास्तव में भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक पर्व रक्षाबंधन स्नेह,सौहार्द एवं सद्भावना का एक ऐसा पर्व है,जो उन्हें अटूट एकता के सूत्र में बांध देता है। श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाए जाने वाले रक्षाबंधन पर्व की भारतीय समाज और संस्कृति में कितनी महत्ता है,इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि बहनों के हाथ अपने भाईयों की कलाईयों पर राखियां बांधने के लिए मचल उठते हैं और कलाई पर बांधे जाने वाले मामूली से दिखने वाले इन्हीं कच्चे धागों से पक्के रिश्ते बनते हैं। पवित्रता तथा स्नेह का सूचक यह पर्व भाई-बहन को पवित्र स्नेह के बंधन में बांधने का पवित्र एवं यादगार दिवस है। इस पर्व को भारत के कई हिस्सों में श्रावणी के नाम से जाना जाता है। पश्चिम बंगाल में 'गुरु महापूर्णिमा',दक्षिण भारत में 'नारियल पूर्णिमा' तथा नेपाल में इसे 'जनेऊ पूर्णिमा' के नाम से जाना जाता है। रक्षाबंधन मनाए जाने के संबंध में अनेक पौराणिक एवं ऐतिहासिकप्रसंगों का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि जब देवराज इन्द्र बार-बार राक्षसों से परास्त होते रहे और हर बार राक्षसों के हाथों देवताओं की हार से निराश हो गए तो इन्द्राणी ने बहुत

कठिन तपस्या की और अपने तपोबल से एक रक्षासूत्र तैयार किया। यह रक्षासूत्र इन्द्राणी ने देवराज इन्द्र की कलाई पर बांध दिया। तपोबल से युक्त इस रक्षासूत्र के प्रभाव से देवराज इन्द्र राक्षसों को परास्त करने में सफल हुए। तभी से रक्षाबंधन पर्व की शुरूआत हुई। एक उल्लेख यह भी मिलता है कि जब भगवान विष्णु ने वामन अवतार लिया था, तब उन्होंने एक ब्राह्मण वेश धारण कर अपनी दानशील प्रवृत्ति के लिए तीनों लोकों में प्रसिद्ध राजा बलि से तीन पग भूमि दान में मांगी और बलि द्वारा उनकी मांग स्वीकार कर लिए जाने पर भगवान वामन ने अपने पग से सम्पूर्ण पृथ्वी को नापते हुए बलि को पाताल लोक भेज दिया। कहा जाता है कि उसी की याद में रक्षाबंधन पर्व मनाया गया।

रक्षाबंधन पर्व से कई ऐतिहासिक प्रसंग भी जुड़े हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से इस पर्व की शुरूआत मध्यकालीन युग से मानी जाती है। भारतीय इतिहास ऐसे प्रसंगों से भरा पड़ा है,जब राजपूत योद्धा अपनी जान की बाजी लगाकर युद्ध के मैदान में जाते थे तो उनके देश की बेटियां उन वीर सैनिकों की आरती उतारकर उनकी कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा करती थी तथा वीर रस के गीत गाकर उनकी हौंसला अफजाई करते हुए उनसे राष्ट्र की रक्षा का प्रण भी कराती थी। कहा जाता है कि उस जमाने में अधिकांश मुस्लिम शासक हिन्दू युवतियों का बलपूर्वक अपहरण करके उन्हें अपने हरम की शोभा बनाने का प्रयास किया करते थे और ऐसी परिस्थितियों से बचने के लिए राजपूत कन्याओं ने बलशाली राजाओं को राखियां भेजकर उनके साथ भ्रातृत्व संबंध स्थापित कर अपने शील की रक्षा करनी आरंभ कर दी थी। उसी परम्परा ने बाद में रक्षाबंधन पर्व का रूप ले लिया। चितौड़ की महारानी कर्मावती का प्रसंग तो इस संबंध में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जब गुजरात के शासक बहादुरशाह ने चितौड़ पर आक्रमण कर दिया तो चितौड़ की महारानी कर्मावती घबरा गई। उन्हें चितौड़ के साथ-साथ स्वयं की तथा चितौड़ की अन्य राजपूत बालाओं की सुरक्षा का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। कोई उपाय न सूझने पर रानी कर्मावती ने बादशाह हुमायूं को राखी के धागे में रक्षा का पैगाम भेजा और हुमायूं को अपना भाई मानते हुए उनसे अपनी सुरक्षा की प्रार्थना की। बादशाह हुमायूं महारानी कर्मावती का यह रक्षासूत्र और संदेश पाकर भाव विभोर हो गए और अपनी इस अनदेखी बहन के प्रति अपना कर्तव्य निभाने तुरन्त अपनी विशाल सेना लेकर चितौड़ की ओर रवाना हो गए लेकिन जब तक वह चितौड़ पहुंचे, तब तक महारानी कर्मावती और चितौड़ की हजारों वीरांगनाएं अपने शील की रक्षा हेतु अपने शरीर की अग्नि में आहूति दे चुकी थी। उसके बाद हुमायूं ने महारानी कर्मावती की चिता की राख से अपने माथे पर तिलक लगाकर बहन के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन करने के लिए जो कुछ किया, वह इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया तथा इसी के साथ रक्षाबंधन पर्व के इतिहास में एक अविस्मरणीय अध्याय भी जुड़ गया।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

सम्पादक

CMYK

भाइयों की कलाई में आज बहनें बांधेंगी राखी,बाजार में रौनक

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,27 अगस्त 2026
(घटती-घटना)।

भाई-बहन के अटूट प्रेम का पर्व रक्षाबंधन शुक्रवार को परंपरागत तरीके से मनाया जाएगा। पर्व को लेकर बाजारों में जबरदस्त रौनक देखने को मिल रही है। शहर के गुदरी बाजार,घड़ी चैक सहित सभी प्रमुख बाजारों में राखी दुकानों पर लोगों की भीड़ उमड़ रही है। महंगाई के साथ बाजार में इस बार राखियों की वैरायटी में काफी इजाफा देखा जा रहा है। 5 रुपये की साधारण राखी से लेकर 500, 1000 रुपये तक की डिजाइनर राखियां उपलब्ध हैं। बच्चों के लिए छोटा भीम, स्पाइडरमैन,डोरेमोन जैसी कार्टून कैरेक्टर वाली राखियां,युवाओं के लिए रुद्राक्ष,स्टोन वर्क और ब्रेसलेट स्टाइल वाली राखियां और भैया-भाभी के लिए जोड़ी लुंबा राखियों के अलावा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वाली फोटो प्रिंट राखियां और नाम वाली कस्टमाइज राखियां आकर्षण का केंद्र बनी हैं। इसके साथ ही चांदी और मेटल की राखियों का भी ट्रेंड इस साल खूब चल रहा है। सोने-चांदी की दुकानों के अलावा फुटपाथ पर लगी दुकानों में भी चांदी की राखियां 300 रुपये से शुरू होकर डेढ़-दो हजार रुपये तक की उपलब्ध हैं।

दुकानदारों के अनुसार चांदी की राखियों को लोग स्थायी याद के तौर पर पसंद कर रहे हैं। इसके अलावा गोल्ड प्लेटेड राखियों की भी मांग है। राखी के साथ-साथ गिफ्ट पैक और लड्डू-गोपाल की राखियां भी बाजार में आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। आभूषण दुकानों में भी बहनों के लिए उपहार खरीदने के लिए लोग पहुंच रहे हैं। बहनों को देने के लिए लोग कान के झुमके, पायल, ब्रेसलेट और छोटे आभूषणों को पसंद कर रहे हैं। आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से भी राखी खरीदने के लिए लोगों का आना हो रहा है। राखी के साथ मिठाई दुकानों में भी भारी भीड़ देखी जा रही है। काजू कतली,रसगुल्ला, गुलाब जामुन और सोनपापड़ी के अलावा दूध से बने मिठाईयों की मांग सबसे ज्यादा है। कई दुकानों पर रक्षाबंधन के लिए स्पेशल गिफ्ट हैम्पर भी तैयार किए गए हैं। हालांकि माह के अंत में रक्षाबंधन का पर्व पड़ने से सामान्य लोग मायूस हैं। कुल मिलाकर रक्षाबंधन को लेकर शहर में उत्साह चरम पर है। बाजार गुलजार हैं और भाई-बहनों को इस पवित्र त्योहार का बेसब्री से इंतजार है।

बसों में सीट नहीं,ट्रेन में वेटिंग

रक्षाबंधन के मौके पर लोगों का अपने गृहग्राम आना-जाना लगा है,जिस कारण यात्री बसों और ट्रेनों में भीड़ है। अंबिकापुर से बिलासपुर-रायपुर,दुर्ग,झारखंड सहित अन्य सीमावर्ती राज्यों की की ओर जाने वाली बसों में सीट फुल रहने से यात्रियों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं ट्रेन में वेटिंग की भरभार रहने से लोग यात्री बसों में सीट तलाश करने में लगे हैं।

केंद्रीय जेल में भी रक्षाबंधन की तैयारी

छत्तीसगढ़ जेल मुख्यालय के निर्देशानुसार,रक्षाबंधन के अवसर पर बहनें जेल में बंद अपने भाइयों को राखी बांध सकती हैं। इसके लिए सुबह 8 बजे से दोपहर 3 बजे तक का समय निर्धारित किया गया है। कई बहनों ने अपने भाईयों को डाक से पहले ही रक्षा सूत्र भेज दिया है। जेल परिसर में प्रवेश के लिए बहनों को अपना मूल पहचान पत्र आधार कार्ड या अन्य वैध आईडी लाना अनिवार्य किया गया है। मुलाकात और राखी बांधने की प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए जेल प्रशासन द्वारा सुरक्षा और अन्य आवश्यक इंतजाम किए गए हैं। बहनों द्वारा लाई गई मिठाई को जांच-पड़ताल के बाद ही अंदर ले जाने की अनुमति होगी। एक बंदी के लिए मात्र 100 ग्राम तक मिठाई, सोनपापड़ी ले जाने की अनुमति रहेगी। स्वास्थ्य सुरक्षा की दृष्टि से मिठाई के अलावा अन्य किसी प्रकार का खाद्य पदार्थ लाना वर्जित है। बहनें अपने साथ मोबाइल, पर्स, पैसे और कीमती सामान लेकर जेल के अंदर नहीं जा पाएंगी।

राखी के पवित्र धागे में स्नेह, विश्वास और जिम्मेदारी का संदेश

पद्मश्री डॉ. उषा बारले ने पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल को बांधी राखी,प्रदेशवासियों को दी रक्षाबंधन की शुभकामनाएं

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,27 अगस्त 2026
(घटती-घटना)।

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर पद्मश्री से सम्मानित प्रसिद्ध पंडवानी एवं पंथी गायिका डॉ. उषा बारले ने पर्यटन,संस्कृति एवं धर्मस्व मंत्री राजेश अग्रवाल को राखी बांधी। इस दौरान भाई-बहन के स्नेह,विश्वास और आत्मीयता से जुड़ा भावपूर्ण माहौल रहा। मंत्री अग्रवाल ने कहा कि रक्षाबंधन केवल कलाई पर राखी बांधने का पर्व नहीं, बल्कि स्नेह,विश्वास, सम्मान और एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ खड़े रहने की जिम्मेदारी का प्रतीक है। उन्होंने डॉ. उषा बारले द्वारा राखी बांधे जाने को अपने लिए विशेष आत्मीय क्षण बताया। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की लोककला,संस्कृति और परंपराओं में पारिवारिक रिश्तों एवं सामाजिक सद्भाव को विशेष महत्व दिया गया है। रक्षाबंधन जैसे पर्व समाज को प्रेम और भाईचारे के सूत्र में बांधने का काम करते हैं। मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, लोककला और परंपराओं को संरक्षित कर नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। इस अवसर पर मंत्री राजेश अग्रवाल ने प्रदेश की माताओं,बहनों और भाइयों को रक्षाबंधन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह पर्व सभी के जीवन में सुख,शांति,समृद्धि और आपसी प्रेम लेकर आए।

थाना प्रभारी को स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय के बालिकाएं एवं प्रजापिता ब्रह्मकुमारी से जुड़ी बहनों ने बांधी राखी,भाई-बहन के स्नेह से भावुक हुआ माहौल

-संवाददाता-
लखनपुर,27 अगस्त 2026
(घटती-घटना)।

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर लखनपुर थाना परिसर में भाई-बहन के प्रेम और स्नेह की सुंदर मिसाल देखने को मिली। स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय की छात्राओं ने थाना प्रभारी संपत पोटाई सहित पुलिसकर्मियों को राखी बांधकर रक्षाबंधन का पर्व मनाया। विद्यालय की बालिकाएं थाना पहुंचीं और थाना प्रभारी संपत पोर्ते की कलाई पर राखी बांधकर उनके उज्ज्वल भविष्य एवं स्वस्थ जीवन की कामना की। इस दौरान थाना प्रभारी ने भी छात्राओं को स्नेहपूर्वक आशीर्वाद के साथ उपहार स्वरूप पेन डायरी देकर उनकी सुरक्षा और शिक्षा के लिए हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया। वहीं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी से जुड़ी बहनों ने भी थाना प्रभारी को राखी बांधकर रक्षाबंधन की शुभकामनाएं दीं। ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा भाई-बहन के पवित्र रिश्ते और समाज में प्रेम,भाईचारे एवं सद्भाव का संदेश दिया गया। इस अवसर पर थाना परिसर में पुलिस अधिकारी-कर्मचारियों और छात्राओं के बीच आत्मीयता का माहौल देखने को मिला। छात्राओं ने पुलिसकर्मियों को केवल कानून-व्यवस्था बनाए रखने वाले अधिकारी के रूप में नहीं, बल्कि समाज की सुरक्षा करने वाले अपने रक्षक भाई के रूप में राखी बांधी। रक्षाबंधन के इस आयोजन ने पुलिस और आम नागरिकों के बीच आपसी विश्वास एवं अपनत्व को और मजबूत करने का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की छात्राओं, शिक्षिकाओं, पुलिसकर्मियों एवं ब्रह्माकुमारी बहनों की उपस्थिति रही।

वाड्रफनगर ज्वेलर्स चोरी का खुलासा: बिहार तक पहुंची पुलिस की जांच,7 गिरफ्तार,चोरी की चांदी गलाकर सिल्लियां बना दी थी...

शटर तोड़कर लाखों के जेवर उड़ाने वाले गिरोह का पर्दाफाश,14.175 किलो चांदी बरामद,चोरी का माल खरीदने वाला सराफ भी गिरफ्तार

-संवाददाता-
बलरामपुर-वाड्रफनगर,27 अगस्त 2026
(घटती-घटना)।

वाड्रफनगर के मुख्य बाजार में 16 अगस्त की रात अरविंद ज्वेलर्स में हुई चोरी ने व्यापारियों की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए थे। शटर का लॉक तोड़कर लाखों रुपये के सोने-चांदी के जेवरात पार करने वाले आरोपियों तक पहुंचना पुलिस के लिए चुनौती थी। अब बलरामपुर पुलिस ने इस मामले की कड़ियां बिहार के रोहतास जिले तक जोड़ते हुए अंतरराज्यीय गिरोह के सात आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने चोरी की चांदी गलाकर बनाई गई 14.175 किलोग्राम चांदी की सिल्लियां, वारदात में प्रयुक्त पिकअप, मोटरसाइकिल, सब्बल, मोबाइल फोन और नकदी बरामद की है।

चोरी से पहले रेकी,फिर शटर तोड़ा और माल लेकर फरार : पुलिस के मुताबिक आरोपियों ने वारदात से पहले वाड्रफनगर क्षेत्र की रेकी की थी। 15 अगस्त के आसपास गिरोह के सदस्य क्षेत्र में पहुंचे और 15 से 16 अगस्त के बीच दुकान तथा आसपास के इलाके की गतिविधियों पर नजर रखी। इसके बाद 17 अगस्त की दरम्यानी रात लोहे के सब्बल से दुकान का शटर तोड़कर अंदर प्रवेश किया गया और चांदी के जेवर लेकर फरार हो गए। घटना की जानकारी सुबह दुकान संचालक को हुई तो बाजार में हड़कंप मच गया। शुरुआती रिपोर्टों में बड़ी मात्रा में सोने-चांदी के जेवर चोरी होने की बात सामने आई थी। घटना के बाद पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और तकनीकी साक्ष्यों को खंगालना शुरू किया।

चोरी के जेवर बाजार में पहुंचने से पहले ही बन गए चांदी की सिल्लियां : इस मामले का सबसे अहम पहलू चोरी के माल को ठिकाने लगाने का सामने आया नेटवर्क है। पुलिस जांच के अनुसार आरोपियों ने चोरी की चांदी को बिहार के दिनारा निवासी सराफ सुनील कुमार सोनी को बेचने की बात स्वीकार की। पुलिस ने उसके घर दबिश देकर चोरी के जेवर गलाकर बनाई गई 14.175 किलो चांदी की सिल्लियां बरामद कीं। पुलिस के अनुसार चोरी की चांदी को करीब 60 हजार रुपये प्रति किलो की दर से बेचने की बात सामने आई है। यानी चोरी के माल को तत्काल नकदी में बदलने की पूरी तैयारी थी। यह तथ्य केवल चोरी करने वाले गिरोह तक जांच सीमित रखने के बजाय चोरी का माल खरीदने और उसे गलाकर स्वरूप बदलने वाले नेटवर्क की भी जांच की जरूरत को रेखांकित करता है।

पहले चोरी, फिर माल गलाकर पहचान मिटाने की कोशिश : यह मामला इसलिए भी गंभीर है क्योंकि चोरी के आभूषणों को उसी रूप में रखने के बजाय उन्हें गलाकर सिल्लियों में बदल दिया गया। इससे सवाल उठता है कि यदि पुलिस तक गिरोह नहीं पहुंचता तो चोरी के जेवरों की पहचान और बरामदगी कितनी मुश्किल हो जाती। पुलिस ने इसी कड़ी को पकड़ते हुए आरोपियों के साथ कथित खरीदार तक पहुंच बनाई है।

सिर्फ सात गिरफ्तारी से खत्म नहीं होगी कहानी : पुलिस की कार्रवाई निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है,लेकिन इस मामले में असली जांच अब आगे शुरू होती है। गिरोह ने वाड्रफनगर को ही निशाना क्यों बनाया? रेकी किसने कराई? स्थानीय स्तर पर किसी ने जानकारी उपलब्ध कराई थी या नहीं? चोरी का माल पहले से तय खरीदार तक इतनी जल्दी कैसे पहुंचा? क्या इस गिरोह का दूसरे जिलों अथवा राज्यों में भी नेटवर्क है? इन सवालों के जवाब सामने आना जरूरी है। खासकर तब,जब शुरुआती जांच में यह सामने आया कि आरोपियों ने वारदात से पहले इलाके की रेकी की थी।

व्यापारियों के लिए राहत, लेकिन सुरक्षा व्यवस्था की परीक्षा भी

घटना शहर के मुख्य बाजार में हुई थी और शुरुआती रिपोर्टों में यह भी सामने आया था कि चोर दुकान में लगे सीसीटीवी का डीवीआर तक अपने साथ ले गए थे। ऐसे में यह सवाल स्वाभाविक है कि बाजार क्षेत्र में रात की निगरानी, पुलिस गश्त और संवेदनशील व्यावसायिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा व्यवस्था कितनी प्रभावी है। पुलिस ने घटना का खुलासा कर फिलहाल व्यापारियों को राहत जरूर दी है, लेकिन आभूषण दुकानों और अन्य संवेदनशील प्रतिष्ठानों की सुरक्षा को लेकर स्थायी व्यवस्था बनाना भी उतना ही जरूरी है। चोरी के बाद आरोपी पकड़ना पुलिस की सफलता है, लेकिन ऐसी वारदात दोबारा न हो, यह व्यवस्था की अगली परीक्षा होगी।

इन आरोपियों की हुई गिरफ्तारी

पुलिस के अनुसार गिरफ्तार आरोपियों में सोनू कुमार,शंकर चौधरी,नरेंद्र चौधरी,लीलू चौधरी, राजकुमार चौधरी,अंगद चौधरी और सुनील कुमार सोनी शामिल हैं। सभी बिहार के रोहतास जिले के अलग-अलग थाना क्षेत्रों के निवासी बताए गए हैं।

पुलिस टीम की कार्रवाई

बलरामपुर पुलिस के अनुसार मामले की जांच में थाना बसंतपुर, चलगली थाना और साइबर सेल की टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही। तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर बिहार तक पहुंचकर आरोपियों को गिरफ्तार किया गया और उनकी निशानदेही पर चोरी का माल बरामद किया गया। अब सवाल केवल चोरी के जेवर बरामद होने का नहीं,बल्कि उस पूरे नेटवर्क की तह तक पहुंचने का है,जो चोरी के माल को खरीदकर उसका स्वरूप बदल देता है। पुलिस यदि इस कड़ी को भी पूरी तरह उजागर करती है तो वाड्रफनगर चोरी कांड का खुलासा महज गिरफ्तारी तक सीमित न रहकर अंतरराज्यीय चोरी के नेटवर्क पर बड़ी चोट साबित हो सकता है।

अस्पतालों की निगरानी पर कलेक्टर सख्त अब 'इयूटी' और 'इलाज' दोनों की परीक्षा

इयूटी ऑवर में निजी प्रैक्टिस पर कार्रवाई के निर्देश,बाहर से दवा-टेस्ट कराने की शिकायतों पर भी चाहिए नियमित निगरानी

सवाल...एक दिन की समीक्षा से सुधरेगी व्यवस्था या साप्ताहिक निरीक्षण भी होगा?

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,27 अगस्त 2026
(घटती-घटना)।

जिले की स्वास्थ्य व्यवस्था को लेकर कलेक्टर अजीत वसंत ने गुरुवार को समीक्षा बैठक में अधिकारियों को कई अहम निर्देश दिए। बैठक में पीवीटीजी परिवारों की शत-प्रतिशत स्वास्थ्य स्क्रीनिंग से लेकर मातृ मृत्यु की रोकथाम,एनआरसी में बच्चों की उपस्थिति, डॉक्टरों की समय पर उपस्थिति, दवाइयों और उपकरणों की उपलब्धता तथा रिक्त पदों पर भर्ती तक की समीक्षा हुई। लेकिन बैठक में सामने आए निर्देशों के बीच सबसे बड़ा सवाल निगरानी की निरंतरता और अस्पतालों में मरीजों को मिलने वाली वास्तविक सुविधा का है। इयूटी ऑवर में निजी प्रैक्टिस करने वाले चिकित्सकों के नर्सिंग होम पर कार्रवाई के निर्देश निश्चित रूप से महत्वपूर्ण हैं,लेकिन अब जरूरत केवल निर्देश जारी करने की नहीं,बल्कि उनके पालन की नियमित और सार्वजनिक रूप से दिखाई देने वाली निगरानी की है।

सवाल यह नहीं कि बैठक में क्या कहा गया,सवाल यह है कि अस्पताल में होता क्या है? स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा बैठकें होती रही हैं और हर बार व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने के निर्देश भी जारी होते हैं। मगर आम मरीज का सवाल इससे आगे का है–क्या निर्देश के बाद अस्पताल की तस्वीर बदलती है? यदि इयूटी ऑवर में चिकित्सक अस्पताल में उपलब्ध नहीं हैं तो मरीज किसके भरोसे रहेगा? और यदि सरकारी अस्पताल में भर्ती मरीज को कथित तौर पर बाहर से दवा खरीदने अथवा जांच कराने की जरूरत पड़ती है,तो आखिर अस्पताल में उपलब्ध संसाधनों और सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ मरीज तक किस हद तक पहुंच रहा है? इन शिकायतों की वास्तविकता की जांच प्रशासनिक स्तर पर होना जरूरी है। शिकायत सही है तो जिम्मेदारी तय हो और गलत है तो स्थिति भी स्पष्ट हो।

बाहर से दवा और जांच की शिकायतों पर भी हो 'ऑडिट' : अस्पताल में भर्ती मरीजों अथवा उनके परिजनों से यदि बाहर से दवाइयां खरीदने या निजी लैब से जांच कराने की शिकायतें मिलती हैं तो इसकी भी गंभीरता से जांच आवश्यक है। हर मामले में यह मान लेना उचित नहीं होगा कि अस्पताल ने ही मरीज को बाहर भेजा। कई बार दवा उपलब्ध न होने, मशीन खराब होने अथवा आवश्यक जांच की सुविधा नहीं होने के कारण भी मरीज को बाहर जाना पड़ सकता है। इसलिए प्रशासन को स्टॉक रजिस्टर,डॉक्टर की पर्ची, अस्पताल की जांच सुविधा और मरीज के बिल तक का मिलान कर वास्तविक स्थिति सामने लानी चाहिए। यही प्रक्रिया यह भी स्पष्ट कर सकती है कि समस्या व्यवस्था की है, संसाधनों की है या किसी स्तर पर मरीज पर अनावश्यक आर्थिक बोझ डाला जा रहा है।

साप्ताहिक निरीक्षण केवल औपचारिकता न बने : जिले के अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति सुधारने के लिए पूर्व निर्धारित समीक्षा बैठकों के साथ साप्ताहिक औचक निरीक्षण और सतत निगरानी को भी नियमित व्यवस्था का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

निरीक्षण के दौरान केवल भवन, सफाई और रिकॉर्ड देखने के बजाय प्रशासन को यह भी देखना चाहिए...

- डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी निर्धारित समय पर मौजूद हैं या नहीं?
- मरीजों को दवाइयां अस्पताल से मिल रही हैं या बाहर से खरीदनी पड़ रही हैं?
- कौन-कौन सी जांच अस्पताल में उपलब्ध है और कौन सी जांच बाहर भेजी जा रही है?
- आवश्यक दवाओं का वास्तविक स्टॉक कितना है?
- मरीजों और परिजनों से कोई अनावश्यक राशि तो नहीं ली जा रही?
- अस्पताल परिसर में निजी प्रैक्टिस अथवा निजी संस्थानों के लिए मरीजों को भेजने की कोई शिकायत तो नहीं?
- शिकायत मिलने पर उसका निराकरण कितने समय में हुआ?

'इयूटी ऑवर' में डॉक्टर कहां हैं...इसका जवाब भी जरूरी

कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि शासकीय स्वास्थ्य संस्थानों में कार्य अवधि के दौरान डॉक्टर अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें तथा इयूटी के समय निजी प्रैक्टिस करने वाले चिकित्सकों के नर्सिंग होम पर कार्रवाई की जाए। यह निर्देश व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन इसे प्रभावी बनाने के लिए अचानक निरीक्षण,उपस्थिति रजिस्टर की जांच, बायोमेट्रिक उपस्थिति और मरीजों से फीडबैक जैसे उपायों को नियमित किया जाना चाहिए। क्योंकि कागज पर डॉक्टर की उपस्थिति और अस्पताल में मरीज को डॉक्टर का मिलना–दोनों अलग-अलग बातें हैं।

दो अल्ट्रासाउंड मशीनों की खरीदी जल्द,लेकिन संचालन भी उतना ही जरूरी : डीएमएफ मद से स्वीकृत दो अल्ट्रासाउंड मशीनों की खरीदी प्रक्रिया शीघ्र पूरी करने के निर्देश दिए गए हैं। लुण्ड्रा और मैनपाट में पोर्टेबल सोनोग्राफी की व्यवस्था करने की बात भी कही गई है। मशीन खरीदना व्यवस्था का पहला चरण है। असली परीक्षा तब होगी जब मशीन उपलब्ध हो,तकनीकी रूप से चालू हो,प्रशिक्षित स्टाफ उपलब्ध हो और जरूरतमंद गर्भवती महिलाओं को समय पर जांच मिल सके। वरना सरकारी मशीन भी सरकारी गोदाम की शोभा बढ़ाने वाली एक और संपत्ति बनकर रह जाएगी।

मातृ मृत्यु से लेकर कुपोषण तक आंकड़ों से आगे जाने की जरूरत

कलेक्टर ने मातृ मृत्यु के कारणों की गहन समीक्षा कर प्रभावी कार्ययोजना बनाने और हाई रिस्क गर्भवती महिलाओं की लगातार निगरानी के निर्देश दिए हैं। एनआरसी में भर्ती बच्चों की शत-प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए भी मॉनिटरिंग के निर्देश दिए गए हैं। यहां भी केवल लक्ष्य पूरा करने के बजाय प्रत्येक मामले की जमीनी मॉनिटरिंग जरूरी है। आखिर आंकड़ों में शत-प्रतिशत उपलब्धि और जमीन पर शत-प्रतिशत सेवा में वही अंतर है,जो फाइल में चल रहे अस्पताल और मरीज के सामने मौजूद अस्पताल में होता है।

अंडर-14 एवं अंडर-16 क्रिकेट टीम के लिए ट्रायल 6 सितम्बर को

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,27 अगस्त 2026
(घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित अंडर-14 एवं अंडर-16 प्लेट ग्रुप क्रिकेट प्रतियोगिता के लिए सरगुजा जिला क्रिकेट संघ की टीम के चयन हेतु ट्रायल का आयोजन रविवार, 6 सितम्बर को किया जाएगा। वहीं अंडर 19 का 30 अगस्त को ट्रायल गांधी स्टेडियम अंबिकापुर में सुबह 9 बजे से शुरू होगा। इच्छुक खिलाड़ियों को ट्रायल में सफेद पोशाक एवं स्वयं के क्रिकेट किट के साथ उपस्थित होना होगा। जिन खिलाड़ियों ने अभी तक अपना पंजीयन नहीं कराया है, वे ट्रायल के दिन पंजीयन फॉर्म के साथ आवश्यक दस्तावेज जमा कर अपना पंजीयन करा सकेंगे। पंजीयन के लिए पिछले छह वर्षों की अंकसूची, पीवीसी आधार कार्ड, डिजिटल जन्म प्रमाण पत्र, वर्तमान पते का प्रमाण, दो पासपोर्ट साइज रंगीन फोटो, पैन कार्ड, ब्लड ग्रुप प्रमाण पत्र एवं निवास प्रमाण पत्र जमा करना अनिवार्य होगा। अंडर 19 वर्ग में शामिल होने वाले खिलाड़ियों का जन्म 1 सितम्बर 2008 के बाद का होना चाहिए। अंडर-14 वर्ग में शामिल होने वाले खिलाड़ियों का जन्म 1 सितंबर 2012 से 31 अगस्त 2014 के बीच होना चाहिए। वहीं अंडर-16 वर्ग में वे खिलाड़ी भाग ले सकेंगे, जिनका जन्म 1 सितंबर 2011 से 31 अगस्त 2013 के बीच हुआ है। अंडर 14 और अंडर 16 ट्रायल के लिए चयनकर्ता के रूप में राजेश अग्रवाल लिली, विवेक सिंह, मधु सिन्हा, अभय सिंह पंकू मौजूद रहेंगे। अंडर 19 के ट्रायल के लिए चयन कर्ता के रूप में संजय सिंह,राजेश देवा,अमित सिन्हा,सतीश मिश्रा होंगे,वहीं छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ,रायपुर की ओर से पर्यवेक्षक की उपस्थिति में चयन प्रक्रिया पूरी की जाएगी। जिला क्रिकेट संघ ने पात्र खिलाड़ियों से निर्धारित समय पर पहुंचकर ट्रायल में शामिल होने की अपील की है।

CMYK

विकास कॉरिडोर या एक्सटेंशन कॉरिडोर?

5 महीने की सड़क 14 महीने बाद भी अधूरी!

7.18 करोड़ की सड़क या एक्सटेंशन का खेल? समय बीता, सड़क अधूरी, विभाग की चुप्पी जारी

सड़क अधूरी, आवागमन बेहाल और एक्सटेंशन जारी! गंगोटी-शिवपुर मार्ग पर अब जवाबदेही का सवाल

ठेकेदार को मोहलत पर मोहलत, सड़क फिर भी अधूरी! 7.18 करोड़ के काम पर पीडब्ल्यूडी से सवाल

गंगोटी-शिवपुर सड़कः निर्माण की रफ्तार कछुए की, एक्सटेंशन की रफ्तार तेज!

एक्सटेंशन की बैसाखी पर 7.18 करोड़ की सड़क! 5 महीने वाली समय-सीमा कब बनी लंबी कहानी?

गुणवत्ता पर सवाल,सड़क अधूरी, फिर भी ठेकेदार पर मेहरबानी? अब एक्सटेंशन का हिसाब मांगे जनता

सड़क कब बनेगी? पहले समय-सीमा खत्म, अब एक्सटेंशन का दौर...पीडब्ल्यूडी की निगरानी कटघरे में...

14 महीने में भी 5.10 किमी सड़क अधूरी! नोटिस कितने,एक्सटेंशन कितने और कार्रवाई कितनी?

विकास कॉरिडोर या एक्सटेंशन कॉरिडोर? 7.18 करोड़ की सड़क पर उठे बड़े सवाल

18.18% कम दर पर मिला ठेका, गुणवत्ता और धीमे निर्माण पर सवाल...अब विभाग से पूछा जा रहा—कितनी बार नोटिस,कितनी बार एक्सटेंशन और आखिर कार्रवाई कब?

ओंकार पाण्डेय

सूरजपुर,27 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

गंगोटी से शिवपुर नवापारा तक 5.10 किलोमीटर लंबी सड़क निर्माण को लेकर उठ रहे सवाल अब केवल गुणवत्ता तक सीमित नहीं रह गए हैं,सड़क की धीमी गति,अधूरे निर्माण के बीच खराब आवागमन और निर्धारित समय-सीमा खत्म होने के बावजूद काम जारी रहने से अब सबसे बड़ा सवाल ठेकेदार को दी गई समय-सीमा में बढ़ोतरी यानी एक्सटेंशन और विभागीय कार्रवाई को लेकर खड़ा हो गया है। लोक निर्माण विभाग ने इस सड़क का कार्यादेश 30 जून 2025 को जारी किया था। कार्य मे. जवाहरलाल गुप्ता को सौंपा गया था, कार्यादेश में कार्य की अवधि 5 माह 00 दिन,वर्षा ऋतु सहित निर्धारित है। यानी उपलब्ध दस्तावेज के आधार पर काम को लगभग नवंबर 2025 तक पूरा हो जाना चाहिए था, लेकिन अगस्त 2026 में भी सड़क पूरी नहीं हुई है,यानी निर्धारित समय-सीमा समाप्त हुए लगभग 9 महीने से अधिक हो चुके हैं। मौके की ताजा तस्वीरों में सड़क का बड़ा हिस्सा अभी निर्माणाधीन दिखाई देता है और कई जगह आवागमन की स्थिति बेहद खराब नजर आती है।

40 प्रतिशत काम का दावा, लेकिन सड़क कब होगी पूरी?- मौके की स्थिति को लेकर सामने आई जानकारी के अनुसार सड़क का निर्माण अभी भी लगभग 40 प्रतिशत के आसपास ही हुआ बताया जा रहा है,यह आंकड़ा विभागीय माप पुस्तिका या आधिकारिक प्रगति रिपोर्ट से स्वतंत्र रूप से सत्यापित नहीं है, इसलिए विभाग को वास्तविक भौतिक प्रगति सार्वजनिक करनी चाहिए,सवाल यह है कि पांच महीने की निर्धारित अवधि वाली 5.10 किलोमीटर सड़क परियोजना इतने लंबे समय बाद भी अधूरी क्यों है? क्या ठेकेदार को समय पर काम पूरा करने के लिए पर्याप्त निर्देश दिए गए? यदि दिए गए तो उनका पालन क्यों नहीं हुआ? और सबसे महत्वपूर्ण–क्या कार्य की समय-सीमा बढ़ाई गई है? बढ़ाई गई है तो कितनी बार और कितने-कितने दिनों के लिए?

एक्सटेंशन कितनी बार मिला, नोटिस कितने जारी हुए?- अब इस पूरे मामले में विभाग से सबसे महत्वपूर्ण जानकारी यही मांगी जानी चाहिए कि 30 जून 2025 के कार्यादेश के बाद से अब तक ठेकेदार को...

- कितनी बार समय-वृद्धि दी गई?
- प्रत्येक एक्सटेंशन की अवधि कितनी थी?
- एक्सटेंशन देने का कारण क्या बताया गया?
- क्या ठेकेदार को कार्य में देरी के लिए नोटिस जारी किए गए?
- कितने नोटिस जारी हुए?
- नोटिस के जवाब में ठेकेदार ने क्या स्पष्टीकरण दिया?
- क्या विलंब के लिए अनुबंधीय दंड लगाया गया?

क्या समय-वृद्धि के बावजूद निर्माण की प्रगति की समीक्षा की गई? इन सवालों का जवाब सामने आने के बाद ही यह स्पष्ट होगा कि देरी के लिए ठेकेदार जिम्मेदार है, परिस्थितियां जिम्मेदार हैं या विभागीय स्तर पर निगरानी में कमी रही है।

18.18 प्रतिशत कम दर पर ठेका, अब लागत नहीं बल्कि गुणवत्ता का सवाल-इस परियोजना की एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि ठेका स्लक से 18.18 प्रतिशत कम दर पर स्वीकृत हुआ, कार्यादेश में निविदा राशि 718.42 लाख और अनुबंध लागत लगभग 587.81 लाख दर्ज है,कम दर पर निविदा स्वीकार होना अपने आप में अनियमितता नहीं है। लेकिन जब उसी परियोजना में निर्माण की गति और गुणवत्ता पर सवाल उठने लगें तो यह जानना जरूरी हो जाता है कि क्या स्वीकृत एस्टीमेट और तकनीकी विनिर्देशों के अनुसार प्रत्येक निर्माण मद पूरी की जा रही है वर्क ऑर्डर में सड़क निर्माण के साथ कई तकनीकी कार्य शामिल हैं–प्राइम कोट,टैक कोट,बिटुमिनस मैकडम,सड़क के शोल्डर,आरसीसी नाली,पुल/कलवर्ट संबंधी कार्य तथा आरसीसी पाइप कलवर्ट आदि, यहां एक और महत्वपूर्ण दस्तावेजी पहलू सामने आता है, छत्तीसगढ़ सरकार के 2022-23 के बजट दस्तावेज में गंगोटी से शिवपुर नवापारा पहुंच मार्ग तक पक्की सड़क निर्माण की लंबाई 3.00 किलोमीटर और लागत 300 लाख दर्ज थी, वहीं 30 जून 2025 के वर्तमान वर्क ऑर्डर में लंबाई 5.10 किलोमीटर और PAC 718.42 लाख दर्ज है, यह जरूरी नहीं कि दोनों रिकॉर्ड में विरोधाभास हो–परियोजना का दायरा, लंबाई,लागत या स्वीकृति बाद में संशोधित हुई हो सकती है,लेकिन विभाग को यह स्पष्ट करना चाहिए कि प्रारंभिक 3 किमी/3 करोड़ की योजना से वर्तमान 5.10 किमी/7.18 करोड़ की परियोजना तक क्या बदलाव हुए,किस स्तर पर संशोधन स्वीकृत हुआ और उसकी वित्तीय एवं तकनीकी स्वीकृति क्या है।

अब मूल सवालः एक्सटेंशन की फाइल कहां है?-

पांच माह की निर्धारित अवधि समाप्त होने के बाद सड़क के जारी रहने की स्थिति में सबसे अहम दस्तावेज Extension of Time के आदेश हैं, यदि विभाग ने समय-वृद्धि दी है तो प्रत्येक आदेश में अवधि और कारण दर्ज होना चाहिए, इसलिए विभाग को सार्वजनिक रूप से बताना चाहिए कि पहली समय-वृद्धि कब दी गई, कितने दिनों की थी, उसके बाद कितनी बार और समय बढ़ाया गया तथा प्रत्येक बार ठेकेदार की प्रगति क्या थी, इसी के साथ यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि देरी के लिए ठेकेदार को कितने नोटिस दिए गए। यदि नोटिस जारी हुए तो उनके जवाब क्या थे और क्या विभाग ने जवाब को स्वीकार करते हुए समय-वृद्धि दी? यदि कोई नोटिस नहीं दिया गया तो निर्धारित समय-सीमा के उल्लंघन पर कार्रवाई क्यों नहीं हुई?

क्या विलंब पर दंड लगा या सिर्फ तारीख बढ़ती रही?-सरकारी निर्माण में समय-सीमा केवल कागज की तारीख नहीं होती,समय पर काम पूरा न होने से ग्रामीणों को आवागमन में परेशानी होती है और निर्माणाधीन मार्ग पर बरसात के दौरान स्थिति और खराब हो सकती है। इसलिए विभाग को यह भी बताना चाहिए कि अनुबंध की शर्तों के अनुसार विलंब पर कोई आर्थिक दंड, रिकवरी,अतिरिक्त सुरक्षा या अन्य कार्रवाई की गई या नहीं,यदि दंड नहीं लगाया गया तो उसका कारण क्या था? क्या विभाग ने देरी को ठेकेदार के नियंत्रण से बाहर की परिस्थितियों के कारण स्वीकार किया? यदि हां, तो उसके समर्थन में कौन से दस्तावेज हैं?

पीडब्ल्यूडी के रिकॉर्ड से भी हो सकती है स्थिति साफ-छत्तीसगढ़ पीडब्ल्यूडी की आधिकारिक रिपोर्टिंग व्यवस्था में भौतिक प्रगति,कार्यवार व्यय,ठेकेदार के अनुबंधित कार्य,अनुबंध पंजी तथा भुगतान संबंधी रिपोर्ट जैसी श्रेणियां उपलब्ध हैं,इसलिए इस सड़क के संबंध में विभागीय प्रगति और भुगतान रिकॉर्ड सामने आने पर यह पता लगाया जा सकता है कि कागज पर कितनी प्रगति दर्ज है और जमीन पर कितनी दिखाई देती है।

मौके की तस्वीरें बता रही हैं अलग कहानी-ताजा तस्वीरों में कई स्थानों पर सड़क पर मिट्टी और पानी जमा दिखाई देता है,कुछ हिस्सों में गिट्टी बिछी है,लेकिन सतह अभी अंतिम सड़क के रूप में तैयार नहीं है,पुलिया और पाइप कलवर्ट के आसपास भी मिट्टी एवं निर्माण सामग्री के बीच आवागमन होता दिखाई देता है,कुछ स्थानों पर सड़क की सतह पर बड़े गड्ढे और पानी भरा हुआ दिखाई दे रहा है,ऐसे में ग्रामीणों का सवाल है कि यदि अभी निर्माणाधीन सड़क पर आवागमन की स्थिति इतनी खराब है तो बारिश के दौरान ग्रामीणों को कितनी परेशानी झेलनी पड़ेगी? हालांकि तस्वीरों के आधार पर किसी निर्माण सामग्री या लेयर को तकनीकी रूप से 'मानक से कम' घोषित नहीं किया जा सकता,इसके लिए विभागीय माप, सामग्री परीक्षण और तकनीकी गुणवत्ता जांच आवश्यक है।

क्या इंजीनियरों को दिखाई नहीं दे रहीं तकनीकी कमियां?- यही इस पूरे मामले का सबसे गंभीर पक्ष है, यदि सड़क निर्माण के दौरान बेस,सब-बेस,कम्पेक्शन,ड्रेनेज,पुलिया और सड़क की ऊंचाई जैसे तकनीकी पहलुओं में कमी है,तो इन्हें समय रहते विभागीय इंजीनियरों द्वारा चिन्हित किया जाना चाहिए, और यदि विभागीय जांच में सब कुछ मानकों के अनुरूप है,तो फिर विभाग को सामने आकर यह बताना चाहिए कि कौन-कौन से गुणवत्ता परीक्षण किए गए और उनकी रिपोर्ट क्या कहती है,सिर्फ यह कह देना पर्याप्त नहीं होगा कि सड़क पर 60 महीने की परफॉर्मेंस गारंटी है, कार्यादेश में कार्य पूर्ण होने के बाद 60 माह की परफॉर्मेंस गारंटी का प्रावधान जरूर है,लेकिन इसका उद्देश्य निर्माण के समय गुणवत्ता मानकों की अनदेखी की अनुमति देना नहीं है।

क्या 60 महीने की गारंटी गुणवत्ता की गारंटी है या जवाबदेही से बचने का आधार?-अगर कोई सड़क खराब बनती है और बाद में वारंटी अवधि में उसे ठेकेदार से ठीक कराया जाता है,तो उससे जनता को होने वाली परेशानी,आवागमन में बाधा और सड़क के समय से पहले खराब होने का सवाल समाप्त नहीं हो जाता,सरकारी सड़क का उद्देश्य पहली बार में ही निर्धारित तकनीकी मानकों के अनुरूप निर्माण करना है,इसलिए सवाल यह नहीं है कि 'खराब हुई तो 60 महीने में ठीक कर देंगे',सवाल यह है कि 'अभी जो बनाया जा रहा है,क्या वह एस्टीमेट और तकनीकी विनिर्देशों के अनुसार बनाया जा रहा है?'

कमीशन की चर्चा भी जांच का विषय, आरोप नहीं-क्षेत्र में विभागीय अधिकारियों और ठेकेदार के बीच कथित मिलीभगत तथा कमीशन को लेकर भी चर्चाएं होने लगी हैं,लेकिन बिना दस्तावेजी या जांच प्रमाण के इसे तथ्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता,हाँ,यदि ठेकेदार को लगातार समय-वृद्धि मिलती रही, नोटिस के बावजूद कार्रवाई नहीं हुई और गुणवत्ता संबंधी शिकायतों पर भी कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई,तो विभागीय मेहरबानी की वजह जानना पूरी तरह जायज सवाल है,इसलिए विभाग को यह स्पष्ट करना चाहिए कि अब तक ठेकेदार के खिलाफ क्या कार्रवाई की गई और अनुबंध की कौन-कौन सी शर्तें लागू की गईं।

क्या 5 महीने की सड़क 2 साल तक एक्सटेंशन में चलती रहेगी?-यह सवाल अब ग्रामीणों के बीच सबसे ज्यादा उठ रहा है, उपलब्ध कार्यादेश में अवधि 5 माह है,छह माह नहीं,इसलिए यदि विभाग ने बाद में समय-वृद्धि दी है तो उसकी पूरी जानकारी सार्वजनिक की जानी चाहिए, आखिर एक 5 महीने की परियोजना को पूरा करने में इतना लंबा समय क्यों लग रहा है? क्या हर कुछ महीने में नया एक्सटेंशन देकर परियोजना को आगे बढ़ाया जाता रहेगा? यदि ठेकेदार निर्धारित समय में काम पूरा नहीं कर पा रहा है तो अनुबंध की शर्तों के तहत विभाग की कार्रवाई क्या है?

अब सड़क से बड़ा सवाल है... जवाबदेही कब तय होगी?

गंगोटी-शिवपुर नवापारा सड़क की कहानी अब केवल एक सड़क निर्माण परियोजना की कहानी नहीं रह गई है,यह सरकारी धन, ठेकेदार की कार्यक्षमता और विभागीय निगरानी की परीक्षा बन चुकी है, 7.18 करोड़ की स्वीकृत लागत वाली परियोजना में सड़क की लंबाई 5.10 किलोमीटर है और अनुबंध में 5 महीने की कार्यावधि निर्धारित थी, अब जनता यह जानना चाहती है की सड़क कब पूरी होगी? कितनी बार एक्सटेंशन दिया गया? कितने नोटिस जारी हुए? क्या किसी अधिकारी ने मौके पर गुणवत्ता जांची? क्या सामग्री और सड़क की प्रत्येक लेयर का परीक्षण हुआ? क्या विलंब के लिए ठेकेदार पर कोई आर्थिक दंड लगाया गया? और सबसे बड़ा सवाल है की क्या विभाग ठेकेदार की सुविधा के अनुसार सड़क निर्माण की तारीख आगे बढ़ाता रहेगा या अब किसी निश्चित समय-सीमा के साथ गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए काम पूरा कराया जाएगा? इन सवालों का जवाब अब केवल ग्रामीणों को नहीं, बल्कि उस हर नागरिक को चाहिए जिसके पैसे से यह सड़क बन रही है।

सैनिक भाइयों के लिए सरगुजा से भेजी गईं 10 हजार राखियां

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,27 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

देश की सीमाओं पर तैनात सैनिकों के लिए सरगुजा जिले के स्काउट्स-गाइड्स, रोवर-रेंजर और विद्यार्थियों ने 10 हजार राखियां तैयार की हैं। भारत स्काउट्स एवं गाइड्स की ऑपरेशन सिपाही रक्षा सूत्र-2026 मुहिम के तहत एकत्रित इन राखियों को गुरुवार को सैनिक भाइयों तक पहुंचाने के लिए बिलासपुर स्थित सैनिक महासंघ कार्यालय भेजा गया। जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. दिनेश कुमार झा के मार्गदर्शन में जिले के शासकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों, शिक्षिकाओं और बालिकाओं ने अपने हाथों से राखियां तैयार कीं। होली क्रॉस शांति निकुंज की बालिकाओं ने भी इस अभियान में सहभागिता करते हुए राखियां बनाईं। डीईओ डॉ. दिनेश कुमार झा ने कहा कि यह पहल विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम,सेवा भावना और देश की रक्षा करने वाले सैनिकों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने का सार्थक प्रयास है। जिला मुख्य आयुक्त तजिन्दर सिंह बग्गा ने अभियान में सहयोग करने वाले सभी विद्यालयों के प्राचार्यों, प्रभारियों और स्काउट्स-गाइड्स का आभार जताया।

शादी से मुकरा प्रेमी,7 माह की गर्भवती युवती और गर्भस्थ शिशु की इलाज के दौरान मौत

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,27 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

गर्भवती युवती और बच्चे की इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतिका का विवाह नहीं हुआ था, और जिस युवक से उसका प्रेम संबंध था वह शादी से इन्कार कर दिया था। जानकारी के मुताबिक, राजपुर थाना क्षेत्र के ग्राम डिगनगर की 19 वर्षीय युवती का ग्राम बगाड़ी के सूरज गोड़ से प्रेम संबंध था, जो शादी करने का आश्वासन देकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाया, जिससे युवती गर्भवती हो गई थी। युवती के स्वजन इससे अनजान थे। समय के साथ युवती के पेट में पल रहा शिशु 5 माह का हो गया, और शारीरिक बदलाव आया तो स्वजन को संदेह हुआ। पूछताछ में वह स्वजन को ग्राम बगाड़ी के सूरज गोड़ से प्रेम संबंध होने की जानकारी दी थी। इसका पता चलने पर युवती के परिवार के सदस्य प्रेमी युवक के घर गए और शादी के बारे में बातचीत किए तो वह शादी करने से इन्कार कर दिया। इसके बाद सामाजिक अपयश के भय से वे इसकी जानकारी पुलिस थाना में नहीं दिए। इधर युवती 7 माह की गर्भवती हो गई और तबियत बिगड़ने पर वे उसे 25 अगस्त को राजपुर स्वास्थ्य केन्द्र लेकर पहुंचे। यहां चिकित्सक ने उसे भर्ती कर लिया था और उसका उपचार चल रहा था। यहां से रेफर करने पर 26 अगस्त की शाम को गर्भवती युवती को लेकर मेडिकल कॉलेज संबद्ध जिला अस्पताल अंबिकापुर के मातृ एवं शिशु अस्पताल में भर्ती कराए थे। यहां उपचार के दौरान युवती और गर्भस्थ शिशु की मौत हो गई। अस्पताल से मिली सूचना पर पुलिस ने मृतिका के शव का पोस्टमार्टम कराया है। युवती को भर्ती कराने के दौरान स्वजन ने इसकी सूचना राजपुर पुलिस थाने में दी थी। मौत के बाद वे आरोपी के विरूद्ध थाने में अपराध दर्ज कराने की तैयारी में हैं। बहरहाल, मामले में स्थानीय पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है।

दुर्ग-अंबिकापुर ट्रेन में यात्रा के दौरान एक युवक बोगी से रहस्यमय तरीके से लापता

-संवाददाता-

भैयाथान,27 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

दुर्ग-अंबिकापुर ट्रेन में यात्रा के दौरान एक युवक बोगी से रहस्यमय तरीके से लापता हो गया। प्रार्थी जगदेव सिंह पिता स्व. बुधु सिंह (62) निवासी ग्राम कुर्रीडिह ने थाना झिलमिली में रिपोर्ट दर्ज कराया है कि, उनका पुत्र कृष्णा सिंह (29) और गांव का जवाहिर सिंह दोनों काम के लिए 07 अगस्त को रायपुर गए थे। वापसी में 10 अगस्त की रात दोनों ने रायपुर से अंबिकापुर आने के लिए एक ही बोगी में टिकट लेकर यात्रा शुरू की,उसलापुर तक दोनों साथ थे। जवाहिर सिंह के अनुसार बृजराजनगर के पास उसकी नींद खुली तो कृष्णा बोगी में नहीं था। आसपास की बोगियों में तलाश करने और सहयात्रियों से पूछने पर भी कुछ पता नहीं चला। इसके बाद सुबह 7 बजे कटोरा स्टेशन उतरकर घर आ गया। परिजनों ने रिश्तेदारों से पता किया लेकिन 26.08.2026 तक युवक का कोई पता नहीं चला। युवक के पास मोबाइल भी नहीं है।

दो वर्षों में विकास की नई तस्वीर

छठ घाट के सूर्य मंदिर से लेकर आत्मानंद स्कूल, सड़क, प्रकाश और जनसुविधाओं तक हुए अनेक कार्य

छठ घाट में सूर्य मंदिर

सड़क एवं डामरीकरण

प्रकाश व्यवस्था

जनसुविधाओं का विस्तार

पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष
लाल मुनी यादव

सूर्य मंदिर निर्माण सौंदर्यीकरण एवं सफाई

स्वामी आत्मानंद स्कूल का विकास

डामर सड़क, नवीनीकरण एवं पेवर ब्लॉक कार्य

सार्वजनिक शौचालय, सफाई एवं स्वच्छता

स्ट्रीट लाईट, फ्लड लाइट एवं बेहतर प्रकाश व्यवस्था

शादी/सामुदायिक भवन एवं अन्य सुविधाएं

दो वर्षों के प्रमुख विकास कार्य

- छठ घाट में सूर्य मंदिर निर्माण एवं सौंदर्यीकरण
- मुख्य बाजार की सड़कों का डामरीकरण एवं नवीनीकरण
- स्वामी आत्मानंद स्कूल से जुड़े विकास कार्य
- सार्वजनिक शौचालय एवं सामुदायिक/शादी भवन निर्माण
- वार्डों में पेवर ब्लॉक एवं नाली, सफाई व्यवस्था में सुधार
- कब्रिस्तान में बाउंड्रीवॉल एवं आवश्यक विकास
- खेल मैदान में फ्लड लाइट एवं प्रकाश व्यवस्था
- प्रमुख स्थानों पर स्ट्रीट लाइट एवं जनसुविधाओं का विस्तार

" काम बोलता है — विकास की शुरुआत हुई है, नगर के बेहतर भविष्य के लिए यह प्रयास निरंतर जारी रहना चाहिए "

दो वर्षों में विकास की नई तस्वीर,शिवपुर-चरचा में बदली सुविधाओं की तस्वीर...

सूर्य मंदिर से आत्मानंद स्कूल तक,दो साल में विकास ने पकड़ी रफ्तार

सड़क,रोशनी,शिक्षा और जनसुविधाएं-दो वर्षों में शिवपुर-चरचा के विकास को नई दिशा

छठ घाट का सूर्य मंदिर बना पहचान, सड़क-प्रकाश से लेकर खेल मैदान तक विकास कार्य

काम बोलता है: दो वर्षों में शिवपुर-चरचा में विकास की नई इबारत

सूर्य मंदिर से फ्लड लाइट तक, विकास कार्यों से बदली शिवपुर-चरचा की तस्वीर

हर वार्ड तक विकास पहुंचाने का प्रयास, दो साल में सड़क-प्रकाश और जनसुविधाओं पर जोर

-रवि सिंह-

कोरिया/शिवपुर-चरचा,27 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

नगर पालिका शिवपुर-चरचा में दो वर्षों के कार्यकाल के दौरान विकास को लेकर किए गए विभिन्न कार्यों ने नगर की आधारभूत सुविधाओं और सार्वजनिक स्थलों को नई दिशा देने का प्रयास किया,पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष लाल मुनी यादव के कार्यकाल में धार्मिक स्थलों के विकास से लेकर शिक्षा,सड़क,प्रकाश व्यवस्था, स्वच्छता,खेल और सार्वजनिक सुविधाओं से जुड़े कई कार्य कराए गए। इन कार्यों में नगरवासियों की लंबे समय से चली आ रही मांगों को प्राथमिकता देने का दावा किया गया, नगर विकास को केवल बड़े निर्माण कार्यों तक सीमित न रखते हुए अलग-अलग वार्डों और सार्वजनिक स्थलों की जरूरतों के अनुसार कार्यों को आगे बढ़ाया गया,यही वजह है कि दो वर्षों के दौरान किए गए कार्यों में धार्मिक आस्था से जुड़े स्थलों के साथ-साथ बाजार,सड़क, स्कूल,खेल मैदान और नागरिक सुविधाओं को भी शामिल किया गया।

छठ घाट में सूर्य मंदिर निर्माण बना प्रमुख आकर्षण-नगर के छठ घाट में सूर्य मंदिर का निर्माण इस कार्यकाल के प्रमुख कार्यों में शामिल रहा,छठ पर्व के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु घाट पर पहुंचते हैं,ऐसे में यहां धार्मिक गतिविधियों के लिए बेहतर वातावरण उपलब्ध कराने की लंबे समय से आवश्यकता महसूस की जा रही थी,सूर्य मंदिर निर्माण के साथ छठ घाट की साफ-सफाई,रंगाई-पुताई और प्रकाश व्यवस्था जैसे कार्यों पर भी ध्यान दिया गया, पर्व के दौरान श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा मिल सके,इसके लिए घाट परिसर को व्यवस्थित करने की दिशा में काम किए जाने की बात सामने आई है,छठ घाट केवल धार्मिक आयोजन का स्थल नहीं बल्कि नगर की सामुदायिक गतिविधियों का भी महत्वपूर्ण केंद्र है, ऐसे में यहां बुनियादी सुविधाओं का विकास स्थानीय लोगों के लिए उपयोगी माना जा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में आत्मानंद स्कूल पर जोर

नगर में शिक्षा की बेहतर सुविधाओं को लेकर स्वामी आत्मानंद स्कूल से संबंधित विकास कार्यों को भी प्राथमिकता दी गई,बेहतर शैक्षणिक वातावरण के लिए स्कूल परिसर और उससे जुड़ी आवश्यक सुविधाओं के विस्तार की दिशा में कार्य किए गए, नगर के बच्चों को स्थानीय स्तर पर बेहतर शिक्षा का वातावरण उपलब्ध कराना किसी भी शहरी क्षेत्र के विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। ऐसे में शिक्षा से जुड़े संस्थानों में सुविधाओं का विस्तार भविष्य की पीढ़ी के लिए निवेश के रूप में देखा जा सकता है।

सड़कों के डामरीकरण से आवागमन को मिली सुविधा

नगर के मुख्य बाजार और प्रमुख आवागमन वाले क्षेत्रों में सड़क निर्माण एवं नवीनीकरण के कार्य भी कराए गए, मुख्य बाजार की सड़कों का डामरीकरण, आवश्यक स्थानों पर सड़क सुधार तथा विभिन्न वार्डों में पेवर ब्लॉक लगाने जैसे कार्यों को नगर की आधारभूत संरचना मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया गया, मुख्य बाजार की सड़कें स्थानीय व्यापार और रोजमर्रा के आवागमन दोनों के लिए महत्वपूर्ण होती हैं, सड़क की स्थिति बेहतर होने से व्यापारियों, ग्राहकों, राहगीरों और अन्य नागरिकों को सुविधा मिलती है, वहीं वार्ड स्तर पर पेवर ब्लॉक जैसे कार्यों से गलियों एवं छोटे संपर्क मार्गों को व्यवस्थित करने में मदद मिलती है।

प्रकाश व्यवस्था पर भी रहा विशेष ध्यान

नगर में प्रकाश व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न स्थानों पर स्ट्रीट लाइट और अन्य प्रकाश व्यवस्था से जुड़े कार्य किए गए,सार्वजनिक स्थानों और प्रमुख मार्गों पर पर्याप्त रोशनी नागरिकों की सुविधा के साथ सुरक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होती है, इसी क्रम में नगर के खेल मैदान में फ्लड लाइट की व्यवस्था विकसित की गई,इससे खिलाड़ियों को शाम और रात के समय भी अभ्यास करने की सुविधा मिल सकती है,नगर के युवाओं और खेल प्रतिभाओं के लिए यह सुविधा विशेष महत्व रखती है,क्योंकि खेल गतिविधियां अब केवल दिन के समय तक सीमित नहीं रहतीं।

सार्वजनिक शौचालय और सामुदायिक भवन की सुविधा-नगर में नागरिकों की मूलभूत जरूरतों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न क्षेत्रों में सार्वजनिक शौचालय निर्माण के कार्य भी किए गए,सार्वजनिक स्थानों पर शौचालय की सुविधा विशेष रूप से बाजार, भीड़भाड़ वाले इलाकों और सार्वजनिक गतिविधियों के लिए जरूरी मानी जाती है, इसके अलावा सामाजिक एवं पारिवारिक आयोजनों के लिए शादी/सामुदायिक भवन जैसी सुविधाओं के विकास पर भी जोर दिया गया। ऐसे भवनों का उपयोग नगर के आम नागरिक विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों के लिए कर सकते हैं, इससे आर्थिक रूप से सामान्य परिवारों को भी स्थानीय स्तर पर आयोजन की सुविधा मिल सकती है।

कब्रिस्तान में बाउंड्रीवॉल और अन्य कार्य-नगर के धार्मिक एवं सामाजिक स्थलों के विकास को भी कार्यों में शामिल किया गया, कब्रिस्तान में बाउंड्रीवॉल,परिसर सुधार और अन्य आवश्यक निर्माण कार्यों की दिशा में कदम उठाए गए,धार्मिक स्थलों की बुनियादी सुविधाओं का विकास विभिन्न समुदायों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नगर विकास का हिस्सा रहा,इसी तरह सार्वजनिक स्थलों की साफ-सफाई और रखरखाव को लेकर भी कार्य किए गए,नगर की स्वच्छता व्यवस्था को मजबूत करने के लिए नाली, सफाई और अन्य आधारभूत व्यवस्थाओं में सुधार की दिशा में काम किया गया।

दो वर्षों के प्रमुख विकास कार्य,पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष लाल मुनी यादव के दो वर्षीय कार्यकाल के दौरान बताए गए प्रमुख कार्यों में-

- छठ घाट में सूर्य मंदिर निर्माण एवं सौंदर्यीकरण
- छठ घाट में सफाई, रंगाई-पुताई और प्रकाश व्यवस्था
- स्वामी आत्मानंद स्कूल से जुड़े विकास कार्य।
- विभिन्न स्थानों पर सार्वजनिक शौचालय निर्माण।
- सामाजिक आयोजनों के लिए शादी/सामुदायिक भवन।
- मुख्य बाजार एवं प्रमुख मार्गों की डामर सड़क और नवीनीकरण।
- विभिन्न वार्डों में पेवर ब्लॉक कार्य।
- कब्रिस्तान में बाउंड्रीवॉल एवं अन्य विकास कार्य।
- खेल मैदान में फ्लड लाइट एवं प्रकाश व्यवस्था।
- प्रमुख स्थानों पर स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था
- नाली, सफाई एवं स्वच्छता व्यवस्था में सुधार।
- नागरिकों की मांग के अनुसार विभिन्न वार्डों में आधारभूत विकास कार्य शामिल बताए गए हैं।

'हर वार्ड में विकास' को बताया प्राथमिकता- पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष लाल मुनी यादव का कहना है कि नगर का विकास केवल बड़े निर्माण कार्यों से नहीं होता, प्रत्येक वार्ड में सड़क, पानी, सफाई, प्रकाश, शिक्षा और सार्वजनिक सुविधाओं की उपलब्धता ही वास्तविक विकास का आधार है, उनके अनुसार दो वर्षों के कार्यकाल में उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से अधिक से अधिक जनहित के कार्यों को प्राथमिकता देने का प्रयास किया गया, उनका कहना है कि नगर के विकास की प्रक्रिया को निरंतर आगे बढ़ाने की जरूरत है, जिन क्षेत्रों में अभी भी बुनियादी सुविधाओं की आवश्यकता है, वहां आने वाले समय में योजनाबद्ध तरीके से काम होना चाहिए।

महिला नेतृत्व और भविष्य की नगर राजनीति पर भी नजर- आगामी नगर पालिका व्यवस्था में महिला आरक्षण के परिप्रेक्ष्य में स्थानीय राजनीति और नेतृत्व को लेकर भी चर्चाएं तेज होने की संभावना है, ऐसे समय में पूर्व कार्यकाल के विकास कार्य, जनसेवा का अनुभव और नागरिकों के साथ संपर्क महत्वपूर्ण विषय बन सकते हैं, नगरवासियों की अपेक्षा केवल सड़क या भवन निर्माण तक सीमित नहीं है, आने वाले समय में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पेयजल, सड़क, प्रकाश, महिला सुविधाओं, युवाओं और खेल प्रतिभाओं के लिए भी नए कार्यों की जरूरत महसूस की जाएगी, नगर के विकास की दिशा तभी मजबूत मानी जाएगी, जब वर्तमान में किए गए कार्यों का रखरखाव भी उतनी ही गंभीरता से हो और नई जरूरतों के अनुसार योजनाएं तैयार की जाएं। विकास कार्यों की गुणवत्ता, उनका नियमित रखरखाव और प्रत्येक वार्ड तक सुविधाओं की समान पहुंच भविष्य के नेतृत्व के सामने प्रमुख चुनौती होगी।

विकास की शुरुआत को निरंतरता की जरूरत

शिवपुर-चरचा में पिछले दो वर्षों के दौरान हुए कार्यों ने धार्मिक स्थलों, शिक्षा, सड़क, प्रकाश, स्वच्छता, खेल और जनसुविधाओं के कई क्षेत्रों को छुआ है, इन कार्यों को नगर के विकास की एक शुरुआत के रूप में देखा जा सकता है। अब आवश्यकता इस बात की है कि विकास की यह गति रुकने के बजाय आगे बढ़े और नई योजनाओं के माध्यम से नगर की जरूरतों को पूरा किया जाए, काम बोलता है – विकास की शुरुआत हुई है, नगर के बेहतर भविष्य के लिए यह प्रयास निरंतर जारी रहना चाहिए।

भाजपा नेता दुर्गाशंकर मिश्रा छह साल के लिए पार्टी से निष्कासित विधायक रेणुका सिंह के करीबी नेताओं में रहे हैं शामिल....

पार्टी विरोधी गतिविधियों और कार्यकर्ताओं को परेशान करने के आरोपों पर कार्रवाई,प्रदेश अध्यक्ष के निर्देश पर प्रदेश महामंत्री ने जारी किया निष्कासन आदेश

-संवाददाता-
एमसीबी,27 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

एमसीबी जिले की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी ने बड़ी संगठनात्मक कार्रवाई करते हुए वरिष्ठ भाजपा नेता दुर्गाशंकर मिश्रा को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से छह वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया है, उन पर लगातार पार्टी विरोधी गतिविधियों में संलिप्त रहने,भाजपा कार्यकर्ताओं को परेशान करने तथा पार्टी की बैठकों एवं कार्यक्रमों को प्रभावित करने के आरोपों के आधार पर यह कार्रवाई की गई है, भाजपा छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंहदेव के निर्देश पर प्रदेश महामंत्री नवीन मार्कंडेय ने 25 अगस्त को निष्कासन आदेश जारी किया। आदेश के मुताबिक यह कार्रवाई तत्काल प्रभाव से लागू होगी। विधायक रेणुका सिंह के करीबी माने जाते हैं दुर्गाशंकर मिश्रा-दुर्गाशंकर मिश्रा को भरतपुर-सोनहत विधानसभा क्षेत्र की विधायक रेणुका सिंह के करीबी नेताओं में माना जाता है, वे वर्तमान में भरतपुर ब्लॉक में विधायक प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत थे। इससे पहले वे जनपद उपाध्यक्ष तथा भाजपा जिला उपाध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों पर भी रह चुके हैं, एमसीबी जिले में लंबे समय से सक्रिय रहने के कारण दुर्गाशंकर मिश्रा को पार्टी के प्रभावशाली स्थानीय नेताओं में गिना जाता रहा है। ऐसे में उनके खिलाफ हुई छह वर्ष के निष्कासन की कार्रवाई को जिले के राजनीतिक एवं संगठनात्मक गलियारों में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

कार्यकर्ताओं ने की थी शिकायत- जानकारी के अनुसार, क्षेत्र के कुछ भाजपा कार्यकर्ताओं की ओर से

भारतीय जनता पार्टी, छत्तीसगढ़
प्रदेश कार्यालय
निष्कासन आदेश

दुर्गाशंकर मिश्रा के खिलाफ पार्टी की बैठकों और संगठनात्मक कार्यक्रमों को प्रभावित करने तथा कार्यकर्ताओं को परेशान करने संबंधी शिकायतें की गई थीं। इन शिकायतों को विधायक स्तर के साथ-साथ प्रदेश संगठन तक भी पहुंचाया गया था,शिकायतों में यह आरोप लगाया गया था कि उनके लगातार हस्तक्षेप और कथित पार्टी विरोधी गतिविधियों के कारण क्षेत्र में संगठनात्मक स्तर पर असहज स्थिति बन रही थी,इससे भाजपा के भीतर गुटबाजी की स्थिति उभरने और कार्यकर्ताओं में असंतोष बढ़ने की बात भी सामने आई थी।

पहले जारी किया गया था कारण बताओ नोटिस-प्रदेश संगठन ने शिकायतों और लगातार सामने आ रही गतिविधियों को गंभीरता से लेते हुए दुर्गाशंकर मिश्रा को 20 जुलाई को कारण बताओ नोटिस जारी किया था, उनसे पार्टी विरोधी गतिविधियों और संगठनात्मक बैठकों एवं कार्यक्रमों को प्रभावित करने के संबंध में जवाब मांगा गया था,बताया गया है कि दुर्गाशंकर मिश्रा की ओर से नोटिस का जवाब प्रस्तुत किया गया, लेकिन प्रदेश संगठन उनके जवाब से संतुष्ट नहीं हुआ, इसके बाद प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंहदेव के निर्देश पर उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई का निर्णय लिया गया।

प्रदेश महामंत्री के आदेश में क्या कहा गया-प्रदेश महामंत्री नवीन मार्कंडेय द्वारा जारी निष्कासन आदेश में कहा गया है कि दुर्गाशंकर मिश्रा द्वारा लगातार भाजपा कार्यकर्ताओं को परेशान करने तथा बैठकों एवं कार्यक्रमों को प्रभावित करने की शिकायतें सामने आई थीं,पार्टी विरोधी गतिविधियों में संलग्न रहने के कारण उन्हें पूर्व में नोटिस जारी किया गया था, आदेश में यह भी उल्लेख किया गया है कि उनके द्वारा प्रस्तुत जवाब से पार्टी संतुष्ट नहीं है। इसी आधार पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के निर्देशानुसार उन्हें पार्टी की सदस्यता से छह वर्ष के लिए निष्कासित किया गया है। आदेश में स्पष्ट किया गया है कि निष्कासन तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

संगठन में कड़ा संदेश- दुर्गाशंकर मिश्रा जैसे वरिष्ठ एवं लंबे समय से संगठन से जुड़े नेता के खिलाफ हुई कार्रवाई को भाजपा के भीतर अनुशासन को लेकर प्रदेश नेतृत्व के कड़े रुख के तौर पर देखा जा रहा है,इस कार्रवाई के जरिए संगठन की ओर से यह संदेश देने की कोशिश मानी जा रही है कि पार्टी विरोधी गतिविधियों अथवा संगठनात्मक अनुशासन के उल्लंघन को किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा, एमसीबी जिले में भाजपा की आंतरिक राजनीति के लिहाज से भी यह कार्रवाई अहम मानी जा रही है,अब देखना होगा कि दुर्गाशंकर मिश्रा के निष्कासन के बाद भरतपुर ब्लॉक में पार्टी की स्थानीय राजनीति और संगठनात्मक समीकरण किस तरह बदलते हैं।

CMYK

जनता बसों का 'खतरनाक सफर'! कार्रवाई का इंतजार या किसी बड़े हादसे का?

जनता बसों का 'खतरनाक खेल'! ओवरलोडिंग से छत पर सवारी तक,परिवहन विभाग की चुप्पी पर सवाल...

करोड़ों के टैक्स बकाये से ओवरलोडिंग तक–जनता बसों की पूरी व्यवस्था सवालों के घेरे में

- बच्चों से लेकर आम यात्रियों की सुरक्षा दांव पर, जनता बसों पर कब होगी कार्रवाई?
- छत पर सवारी, अंदर ओवरलोडिंग! जनता बसों के संचालन पर गंभीर सवाल
- यात्रियों की जान से खिलवाड़? जनता बसों में नियमों की अनदेखी के आरोप
- टैक्स बकाया, ओवरलोडिंग और परमिट पर सवाल–फिर भी जनता बसें बेखौफ!
- 'अधिकारी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते'–जनता बसों के संचालन में कथित दबदबे की भी जांच जरूरी

-राजेन्द्र शर्मा-

मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर,27 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

जिले में संचालित जनता बस सेवा को लेकर यात्रियों की सुरक्षा और परिवहन विभाग की निगरानी व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठने लगे हैं। बस संचालन में नियमों की कथित अनदेखी, टैक्स बकाया,परमिट के कथित दुरुपयोग, क्षमता से अधिक यात्रियों को बैठाने तथा स्कूली बच्चों को असुरक्षित तरीके से ले जाने जैसे आरोप सामने आने के बाद अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि संबंधित विभाग इन शिकायतों पर प्रभावी कार्रवाई कब करेगा।

मामला इसलिए भी गंभीर है क्योंकि यदि लगाए जा रहे आरोप जांच में सही पाए जाते हैं तो यह केवल परिवहन नियमों के उल्लंघन का मामला नहीं रहेगा,बल्कि सीधे आम यात्रियों और स्कूली बच्चों की सुरक्षा से जुड़ा विषय बन जाएगा, ऐसे में किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार करने के बजाय परिवहन विभाग और पुलिस प्रशासन को शिकायतों की तथ्यात्मक जांच कर स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए,हालांकि इस पूरे मामले में लगाए गए आरोपों की स्वतंत्र और आधिकारिक पुष्टि अभी आवश्यक है,इसलिए किसी व्यक्ति या बस संचालक को जांच पूरी होने से पहले दोषी ठहराना उचित नहीं होगा।

करोड़ों रुपये के टैक्स बकाये का दावा,रिकॉर्ड से हो पुष्टि-बस संचालक सैफ खान के संबंध में दावा किया जा रहा है कि बिलासपुर आरटीओ में उनके ऊपर करोड़ों रुपये से अधिक का टैक्स बकाया है और उन्हें डिफाल्टर घोषित किया जा चुका है,यह दावा कितना सही है,इसका अंतिम जवाब संबंधित आरटीओ के रिकॉर्ड से ही सामने आ सकता है, यदि वास्तव में किसी वाहन संचालक के ऊपर लंबे समय से बड़ी राशि का टैक्स बकाया है और इसके बावजूद संबंधित वाहन नियमित रूप से संचालित हो रहे हैं,तो परिवहन विभाग के सामने कई सवाल खड़े होते हैं,क्या टैक्स वसूली की कार्रवाई हुई? क्या संबंधित वाहनों का संचालन प्रभावित हुआ? क्या वाहन के परमिट और फिटनेस की स्थिति की समीक्षा की गई? क्या बकाया राशि को लेकर विभाग ने कोई नोटिस या अन्य कार्रवाई की? इन सभी बिंदुओं का रिकॉर्ड सार्वजनिक होने पर स्थिति काफी हद तक स्पष्ट हो सकती है।

स्कूली बच्चों को लगेज कैरियर में बैठाने का दावा बेहद गंभीर- मामले में सबसे चिंताजनक आरोप यह है कि कथित रूप से लगेज कैरियर में स्कूली छात्र-छात्राओं को बैठाकर लाया-ले जाया जाता है,यदि यह आरोप सही पाया जाता है तो इसे किसी भी स्थिति में सामान्य परिवहन उल्लंघन मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता,स्कूली बच्चे सबसे संवेदनशील यात्री वर्ग में आते हैं और उनके परिवहन में सुरक्षा मानकों का पालन होना आवश्यक है, इस आरोप की पुष्टि के लिए विभाग मौके पर निरीक्षण कर सकता है। स्थानीय स्कूलों,अभिभावकों और यात्रियों से जानकारी लेकर भी वास्तविक स्थिति का पता लगाया जा सकता है,यदि जांच में बच्चों को इस प्रकार असुरक्षित तरीके से ले जाने की पुष्टि होती है तो जिम्मेदारी तय करना आवश्यक होगा।

'अधिकारी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते'...दावे की भी हो जांच-स्थानीय सूत्रों के हवाले से यह दावा भी चर्चा में है कि बस संचालक कथित रूप से अधिकारियों पर प्रभाव होने और विभागीय कार्रवाई से बचने की बातें करते हैं,इस दावे की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है। किसी व्यक्ति द्वारा कही गई बात को तथ्य मान लेना उचित नहीं होगा,लेकिन यदि वास्तव में किसी सरकारी अधिकारी को प्रभावित करने, कार्रवाई रोकने या किसी प्रकार के अनुचित लाभ का प्रयास किया गया है तो यह अलग से जांच का विषय बन सकता है,ऐसे मामले में विभागीय अधिकारियों के निर्णय,निरीक्षण रिपोर्ट,चालानी कार्रवाई और परमिट संबंधी दस्तावेजों की समीक्षा की जा सकती है।

पुराने हादसों के बाद भी सबक कितना?-जनता बसों के संचालन को लेकर पूर्व में हुए हादसों का उल्लेख करते हुए स्थानीय लोगों में सुरक्षा को लेकर चिंता व्यक्त की जाती रही है,विशेष रूप से अंबिकापुर के पुराने बस स्टैंड से जुड़ी घटना का हवाला देकर लोग सवाल उठा रहे हैं कि हादसों के बाद क्या बस संचालन से जुड़े सुरक्षा मानकों की पर्याप्त समीक्षा की गई? हादसे के बाद सामान्य तौर पर वाहन की फिटनेस,परमिट,बीमा,चालक का लाइसेंस,ब्रेक सिस्टम,टायर,यात्री क्षमता और अन्य सुरक्षा मानकों की जांच महत्वपूर्ण होती है, इसलिए यह जानना भी जरूरी है कि संबंधित मार्गों पर संचालित बसों की नियमित फिटनेस जांच कब हुई और उसके निष्कर्ष क्या रहे।

सिर्फ कागजी जांच नहीं,सड़क पर उतरना जरूरी- यदि परिवहन विभाग वास्तव में शिकायतों की जांच करना चाहता है तो केवल कार्यालय में बैठकर दस्तावेज देखने से पूरी तस्वीर सामने नहीं आएगी,जरूरत है कि अधिकारी अचानक बस स्टैंड और प्रमुख मार्गों पर जांच अभियान चलाएं,बसों को रोककर उनकी यात्री क्षमता,परमिट, फिटनेस,बीमा और टैक्स की स्थिति जांची जाए, साथ ही यह भी देखा जाए कि बसों में यात्रियों को किस स्थिति में बैठाया जा रहा है,यदि स्कूली बच्चों को लेकर कोई शिकायत है तो संबंधित समय पर औचक निरीक्षण ज्यादा प्रभावी साबित हो सकता है।

जांच में ये दस्तावेज हो सकते हैं अहम, पूरे मामले की निष्पक्ष जांच के लिए परिवहन विभाग को कम से कम इन बिंदुओं का सत्यापन करना चाहिए...

- संबंधित सभी बसों का परमिट और परमिट की शर्तें
- वाहन का पंजीयन और वास्तविक स्वामित्व
- टैक्स भुगतान और कथित बकाया
- वाहन की फिटनेस प्रमाण-पत्र
- बीमा की वैधता
- चालक का ड्राइविंग लाइसेंस
- निर्धारित और वास्तविक यात्री क्षमता
- पूर्व में किए गए चालान और विभागीय कार्रवाई
- स्कूली बच्चों के परिवहन से संबंधित शिकायतों की वास्तविकता
- बसों के संचालन में परिवार के अलग-अलग सदस्यों की भूमिका इन दस्तावेजों और मौके की स्थिति का मिलान होने के बाद ही आरोपों की वास्तविकता सामने आ सकती है।

परिवार के अलग-अलग नामों पर बसें और परमिट?-

स्थानीय स्तर पर यह आरोप भी लगाया जा रहा है कि परिवार के अलग-अलग सदस्यों के नाम पर कई बसें और परमिट संचालित किए जा रहे हैं, यदि ऐसा है तो परिवहन विभाग के लिए वाहन स्वामित्व, परमिट धारक, वास्तविक संचालक और बसों के संचालन की पूरी श्रृंखला का सत्यापन करना जरूरी है, किस वाहन का परमिट किसके नाम है, वाहन का वास्तविक संचालन कौन कर रहा है और टैक्स तथा अन्य वैधानिक देनदारियों की स्थिति क्या है–इनका मिलान आरटीओ रिकॉर्ड से किया जा सकता है, यदि सभी दस्तावेज नियमों के अनुरूप हैं तो इस संबंध में स्थिति स्पष्ट हो जाएगी, लेकिन यदि वाहन स्वामित्व और वास्तविक संचालन में अंतर मिलता है तो नियमानुसार आगे की कार्रवाई की आवश्यकता होगी।

ओवरलोडिंग का आरोप, यात्रियों की जान पर कितना जोखिम?-

पूरे मामले का सबसे गंभीर पक्ष क्षमता से अधिक यात्रियों को बैठाने का आरोप है, स्थानीय स्तर पर यह भी दावा किया जा रहा है कि अधिक यात्रियों को बैठाकर बसों की क्षमता से ज्यादा संचालन किया जाता है, ओवरलोडिंग की स्थिति में बस चालक के नियंत्रण, ब्रेकिंग दूरी और यात्रियों की सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, यही वजह है कि यात्री क्षमता से जुड़े नियमों का पालन सार्वजनिक परिवहन में विशेष महत्व रखता है, ऐसे में केवल शिकायतों के आधार पर निष्कर्ष निकालने के बजाय परिवहन विभाग को अचानक निरीक्षण कर वास्तविक स्थिति की जांच करनी चाहिए, बस के परमिट में निर्धारित यात्री क्षमता और मौके पर मौजूद यात्रियों की संख्या का मिलान किया जा सकता है।

जनता बसो के संचालन पर गंभीर सवाल: कार्रवाई का इंतजार या किसी बड़े हादसे का?

परिवहन विभाग और पुलिस की कार्यप्रणाली पर उठ रहे सवाल, यात्रियों की सुरक्षा से खिलवाड़ के आरोप

- करोड़ों के टैक्स बकाये का दावा, फिर भी कार्रवाई पर सवाल
- एक बस में क्षमता से अधिक यात्री बैठाने का आरोप
- स्कूली बच्चों को लगेज कैरियर में बैठाने का दावा
- परमिट के दुरुपयोग और प्रभाव के दावे की भी हो जांच
- पुराने हादसों के बाद भी सबक क्यों नहीं?

पुलिस की भूमिका भी महत्वपूर्ण

बस संचालन से जुड़े मामलों में परिवहन विभाग की प्राथमिक भूमिका है,लेकिन यदि ओवरलोडिंग, असुरक्षित परिवहन या किसी आपराधिक गतिविधि की पुष्टि होती है तो पुलिस की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो सकती है, विशेषकर यदि किसी दुर्घटना के बाद सुरक्षा मानकों की अनदेखी सामने आती है तो जिम्मेदारी का निर्धारण केवल चालक तक सीमित नहीं रहना चाहिए,वाहन मालिक, संचालक और अन्य जिम्मेदार व्यक्तियों की भूमिका भी तथ्यों के आधार पर जांची जानी चाहिए।

अगर आरोप गलत हैं तो विभाग स्थिति साफ करे-

इस पूरे मामले में एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि आरोपों की आधिकारिक पुष्टि अभी बाकी है,इसलिए यदि बस संचालक के खिलाफ लगाए जा रहे आरोप तथ्यहीन हैं तो संबंधित परिवहन विभाग और संचालक के पास दस्तावेजों के माध्यम से स्थिति स्पष्ट करने का पूरा अवसर है,यदि टैक्स बकाया नहीं है, तो रिकॉर्ड सामने रखा जा सकता है, यदि परमिट पूरी तरह वैध हैं,तो उनका सत्यापन कराया जा सकता है। यदि ओवरलोडिंग नहीं होती तो विभाग की नियमित जांच रिपोर्ट सामने लाई जा सकती है,लेकिन यदि जांच में आरोप सही पाए जाते हैं तो नियमानुसार कार्रवाई भी उतनी ही जरूरी होगी।

कार्रवाई का इंतजार या किसी हादसे का?

जनता बस सेवा आम लोगों के लिए महत्वपूर्ण परिवहन साधन है, ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों के यात्रियों के लिए बसें केवल आवागमन का माध्यम नहीं,बल्कि स्कूल,बाजार,अस्पताल और रोजगार तक पहुंच का प्रमुख साधन हैं,इसीलिए बस संचालन में किसी भी प्रकार की लापरवाही को हल्के में नहीं लिया जा सकता,टैक्स बकाया है तो वसूली क्यों नहीं? परमिट में गड़बड़ी है तो कार्रवाई क्यों नहीं? ओवरलोडिंग है तो चालानी कार्रवाई क्यों नहीं? बच्चों को असुरक्षित तरीके से ले जाया जा रहा है तो तत्काल रोक क्यों नहीं? इन सवालों का जवाब परिवहन विभाग और पुलिस प्रशासन को देना चाहिए, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी भी आरोप को सच मानकर कार्रवाई नहीं, बल्कि जांच के बाद तथ्य के आधार पर कार्रवाई हो, लेकिन गंभीर शिकायत मिलने के बाद जांच ही न हो,यह स्थिति भी उचित नहीं कही जा सकती, अब जरूरत है कि बिलासपुर आरटीओ, संबंधित परिवहन अधिकारी और पुलिस प्रशासन संयुक्त रूप से जनता बसों के संचालन की व्यापक जांच करें, यदि सब कुछ नियमों के अनुसार है तो यात्रियों को भरोसा मिलेगा और यदि नियमों का उल्लंघन पाया जाता है तो समय रहते सुधारात्मक कार्रवाई की जा सकेगी, क्योंकि परिवहन व्यवस्था में सबसे बड़ा सवाल बस कितनी कमाई कर रही है, यह नहीं...सबसे बड़ा सवाल यह है कि उसमें बैठा यात्री सुरक्षित घर पहुंच रहा है या नहीं, हादसे के बाद जांच करने से बेहतर है कि हादसे से पहले नियमों की जांच कर ली जाए,अब फैसला विभाग को करना है...कार्रवाई शिकायत के बाद होगी या किसी बड़ी दुर्घटना के बाद?

बिना लाइसेंस शराब के नशे में स्कूटी चलाना पड़ा महंगा,15 हजार का जुर्माना

दरिमा पुलिस की कार्रवाई,ड्रंक एंड ड्राइव के साथ बिना वैध लाइसेंस वाहन चलाने पर कोर्ट ने सुनाया फैसला

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,27 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने और यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ सरगुजा पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी है। इसी कड़ी में दरिमा पुलिस की चेकिंग के दौरान शराब के नशे में स्कूटी चलाते मिले 20 वर्षीय युवक को न्यायालय ने 15 हजार रुपए के अर्थदंड से दंडित किया है। पुलिस के अनुसार दरिमा थाना क्षेत्र में वाहन चेकिंग के दौरान स्कूटी क्रमांक छत्त 15 श्वत 8224 को रोककर चालक से पूछताछ की गई। चालक ने अपना नाम आकाश कुजूर, पिता दोमनीक कुजूर, उम्र 20 वर्ष, निवासी दरिमा बताया। पुलिस को चालक के शराब के नशे में होने का संदेह हुआ। इसके बाद उसका डॉक्टरी मुलाहिजा कराया गया, जिसमें उसके शराब के नशे में होने की पुष्टि हुई।

लाइसेंस भी नहीं था,नशे में भी चला रहा था वाहन

जांच के दौरान यह भी सामने आया कि स्कूटी चालक के पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस नहीं था। एक ओर वह बिना लाइसेंस वाहन चला रहा था,वहीं दूसरी ओर शराब का सेवन कर सड़क पर वाहन दौड़ा रहा था। पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए उसके विरुद्ध धारा 3/181 एवं 185 मोटर व्हीकल एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किया। प्रकरण को आवश्यक कार्रवाई के बाद माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया, जहां न्यायालय ने स्कूटी चालक को 15,000 रुपए के अर्थदंड से दंडित किया।

नशे में ड्राइविंग पर पुलिस की सख्ती

पुलिस का कहना है कि शराब के नशे में वाहन चलाना न केवल यातायात नियमों का उल्लंघन है, बल्कि इससे चालक के साथ-साथ सड़क पर चलने वाले अन्य लोगों की जान भी खतरे में पड़ती है। इसी वजह से सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के उद्देश्य से ड्रंक एंड ड्राइव तथा बिना लाइसेंस वाहन चलाने वालों के खिलाफ लगातार कार्रवाई की जा रही है। इस पूरी कार्रवाई में थाना दरिमा से उप निरीक्षक सत्येंद्र सिंह सहित अन्य पुलिस अधिकारी-कर्मचारी सक्रिय रहे।

स्मार्ट मीटर के विरोध में कांग्रेस का डोर-टू-डोर अभियान, ग्रामीणों से भरवाए गए आवेदन

बड़गांव मंडल व बूथ कांग्रेस कमेटी की संयुक्त बैठक में लिया निर्णय

आमापारा में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने चलाया जनसंपर्क अभियान

-संवाददाता-

बैकुंठपुर,27 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देश एवं जिला कांग्रेस कमेटी के निर्देशन में स्मार्ट मीटर के विरोध को लेकर कांग्रेस ने जनसंपर्क अभियान तेज कर दिया है। इसी क्रम में 26 अगस्त 2026 को बड़गांव मंडल कांग्रेस कमेटी एवं बूथ कांग्रेस कमेटी की संयुक्त बैठक आयोजित की गई,बैठक में स्मार्ट मीटर के विरोध में आम लोगों से आवेदन फार्म भरवाने और इसके लिए डोर-टू-डोर जनसंपर्क अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। बैठक के बाद बड़गांव मंडल कांग्रेस कमेटी एवं बूथ कांग्रेस कमेटी आमापारा के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने घर-घर पहुंचकर ग्रामीणों से संपर्क किया तथा स्मार्ट मीटर को लेकर उनकी आपत्तियों और चिंताओं को जाना, इस दौरान ग्रामीणों से विरोध संबंधी आवेदन फार्म भी भरवाए गए, कांग्रेस नेताओं ने कहा कि स्मार्ट मीटर को लेकर आम उपभोक्ताओं के बीच कई तरह की आशंकाएं हैं,ऐसे में पार्टी द्वारा लोगों की समस्याओं और आपत्तियों को आवेदन के माध्यम से दर्ज कर शासन तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। कांग्रेस का कहना है कि बिजली उपभोक्ताओं के हितों और उनकी समस्याओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

आमापारा में ग्रामीणों से किया संपर्क- बैठक के निर्णय के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने आमापारा क्षेत्र में पहुंचकर ग्रामीणों से संपर्क किया,इस दौरान स्मार्ट मीटर के विरोध में आवेदन फार्म भरवाए गए,कांग्रेस पदाधिकारियों ने ग्रामीणों से उनकी समस्याओं की जानकारी ली तथा अभियान के उद्देश्य के बारे में बताया, कांग्रेस नेताओं के अनुसार यह अभियान केवल एक स्थान तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि मंडल एवं बूथ स्तर पर इसे आगे बढ़ाया जाएगा,कार्यकर्ताओं का प्रयास रहेगा कि अधिक से अधिक उपभोक्ताओं की राय और शिकायतों को आवेदन के माध्यम से सामने लाया जाए।

बैठक में बनी आंदोलन की रणनीति

बड़गांव मंडल कांग्रेस कमेटी की बैठक में स्मार्ट मीटर के मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की गई, पदाधिकारियों ने कहा कि प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आदेश और जिला कांग्रेस कमेटी के निर्देशन के तहत मंडल एवं बूथ स्तर पर अभियान चलाया जाएगा, कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी दी गई कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में ग्रामीणों से संपर्क करें और स्मार्ट मीटर को लेकर उनकी शिकायतों एवं आपत्तियों को आवेदन के माध्यम से दर्ज कराएं, इसके लिए डोर-टू-डोर अभियान को प्रभावी तरीके से संचालित करने पर जोर दिया गया।

पूर्व विधायक सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी रहे मौजूद-कार्यक्रम में पूर्व विधायक अंबिका सिंह देव,जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष प्रदीप गुप्ता,जिला कांग्रेस कमेटी कोषाध्यक्ष अशोक जायसवाल,जिला उपाध्यक्ष सलेन्द्र सिंह, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष बिहारी लाल राजवाड़े,बृजवासी तिवारी,ब्लॉक महामंत्री अमन देवांगन,शशि प्रभा देवांगन,महिला कांग्रेस अध्यक्ष चांदनी सोनी,मंडल अध्यक्ष राम साय सोरी,सेक्टर अध्यक्ष इंद्र देव पाण्डेय,पंचायत अध्यक्ष रामचंद्र पैकरा एवं बूथ अध्यक्ष शिव कुमार प्रजापति सहित बड़गांव मंडल के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे,इसके अलावा आमापारा के ग्रामीणों की भी कार्यक्रम में सहभागिता रही,कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कहा कि बूथ स्तर तक पहुंचकर लोगों की समस्याओं को सुनना और उन्हें संबंधित स्तर तक पहुंचाना पार्टी के अभियान का प्रमुख उद्देश्य है।

स्मार्ट मीटर के मुद्दे पर कांग्रेस का विरोध-स्मार्ट मीटर को लेकर कांग्रेस लगातार विरोध दर्ज करा रही है, पार्टी का कहना है कि बिजली व्यवस्था में किसी भी प्रकार के बदलाव का सीधा असर उपभोक्ताओं पर पड़ता है, इसलिए उपभोक्ताओं की शंकाओं और समस्याओं का समाधान किया जाना जरूरी है,कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने ग्रामीणों से अपील की कि वे अपनी समस्याओं और आपत्तियों को आवेदन के माध्यम से दर्ज कराएं, ताकि उनकी आवाज शासन तक पहुंचाई जा सके,मंडल कांग्रेस ने आने वाले दिनों में भी इस अभियान को जारी रखने की बात कही है, बड़गांव मंडल कांग्रेस कमेटी के इस अभियान से स्मार्ट मीटर का मुद्दा एक बार फिर ग्रामीण स्तर पर चर्चा में आ गया है, अब देखना होगा कि कांग्रेस द्वारा एकत्र किए जा रहे आवेदनों और ग्रामीणों की आपत्तियों पर शासन एवं बिजली विभाग की ओर से क्या रुख सामने आता है।

CMYK

रक्षाबंधन स्पेशल :हम साथ-साथ हैं से जिगरा तक, राखी के दिन परिवार संग जरूर देखें ये फिल्में

रक्षाबंधन का त्योहार उन यादों को फिर से जीने का मौका देता है,जो भाई-बहन के साथ बचपन से जुड़ी होती हैं। कभी छोटी-सी बात पर लड़ाई,कभी एक-दूसरे की शिकायत और कभी मुश्किल समय में बिना कहे साथ खड़े होना,भाई-बहन का रिश्ता इन सभी भावनाओं से मिलकर बनता है। इस रिश्ते की इसी खूबसूरती को बॉलीवुड ने भी कई बार पर्दे पर उतारा है। कुछ फिल्मों में भाई अपनी बहन के लिए हर मुश्किल से लड़ता दिखाई देता है, तो कुछ कहानियों में बहन अपने भाई को बचाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहती है। ऐसे में अगर इस रक्षाबंधन पर परिवार के साथ घर में बैठकर फिल्म देखने का प्लान बना रहे हैं, तो ये फिल्में आपके दिन को और खास बना सकती हैं।

हम साथ-साथ हैं : सूरज बड़जात्या की साल 1999 में आई फिल्म हम साथ-साथ हैं परिवार और रिश्तों पर बनी लोकप्रिय फिल्मों में शामिल है। फिल्म में तीन भाइयों और उनकी बहन के बीच का रिश्ता भी कहानी का अहम हिस्सा है। परिवार में गलतफहमियां आती हैं,दूरियां बनती हैं,लेकिन भाई-बहन और पूरे परिवार का प्यार कमजोर नहीं पड़ता। फिल्म में रक्षाबंधन से जुड़ा सीन भी दर्शकों को भावुक करता है। सलमान खान, सैफ अली खान, मोहनीश बहल और नीलम जैसे कलाकारों से सजी यह फिल्म परिवार के साथ देखने लायक है।

माय ब्रदर... निखिल-संजय सूरी और जूही चावला की साल 2005 में आई फिल्म भाई-बहन के रिश्ते की एक बेहद भावुक कहानी है। फिल्म में निखिल की जिंदगी में मुश्किल समय आता है,लेकिन उसकी बहन हर कदम पर उसके साथ खड़ी रहती है। कहानी यह दिखाती है कि जब दुनिया किसी इंसान से दूर होने लगे,तब परिवार का प्यार उसके लिए कितनी बड़ी ताकत बनता है। भाई-बहन के रिश्ते को खूबसूरती से दिखाने वाली यह फिल्म रक्षाबंधन पर भावुक करती है।

फिजा : करिश्मा कपूर और ऋतिक रोशन की फिजा भाई-बहन के रिश्ते पर बनी सबसे इमोशनल फिल्मों में गिनी जाती है। साल 2000 में आई इस फिल्म में ऋतिक ने अमान और करिश्मा ने फिजा का किरदार निभाया था। दंगों के बाद अमान गायब हो जाता है और उसकी बहन उसे ढूंढने की उम्मीद नहीं छोड़ती। वह अपने भाई को वापस पाने के लिए लंबे समय तक कोशिश करती रहती है। फिल्म में बहन का अपने भाई के लिए प्यार और उसे बचाने की कोशिश कहानी का सबसे मजबूत हिस्सा है।

रक्षा बंधन : फिल्म के नाम से ही साफ है कि अक्षय कुमार की रक्षा बंधन भाई-बहन के रिश्ते पर केंद्रित है। साल 2022 में आई इस फिल्म में अक्षय कुमार का किरदार अपनी बहनों की शादी कराने की जिम्मेदारी उठाता है। इस जिम्मेदारी के दौरान उसके सामने कई मुश्किलें आती हैं। फिल्म में परिवार की परेशानियों के साथ भाई-बहन के प्यार और एक-दूसरे के लिए किए जाने वाले त्याग को दिखाया गया है। कहानी कहीं हंसाती है तो कहीं भावुक भी करती है।

जिगरा : आलिया भट्ट की जिगरा भाई-बहन के रिश्ते को थोड़ा अलग नजरिए से दिखाती है। फिल्म में दिखाया जाता है कि एक बहन अपने भाई की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जा सकती है। आलिया का किरदार अपने भाई को मुश्किल से निकालने के लिए लगातार कोशिश करता है। रक्षाबंधन पर इस फिल्म को देखना इसलिए भी खास है, क्योंकि इसमें भाई द्वारा बहन की रक्षा करने वाली सोच को नहीं, बल्कि बहन के अपने भाई के लिए लड़ने की कहानी दिखाई गई है।

सरबजीत : अगर आप किसी सच्ची घटना से जुड़ी कहानी देखना चाहते हैं, तो सरबजीत भी एक विकल्प है। फिल्म में सरबजीत के पाकिस्तान की जेल में फंसने के बाद उसकी बहन दलबीर कौर का संघर्ष दिखाया गया है। वह अपने भाई को वापस लाने के लिए लंबे समय तक कोशिश करती है और कई मुश्किलों का सामना करती है। भाई के लिए बहन का यह संघर्ष फिल्म को बेहद भावुक बना देता है।

रक्षाबंधन से पहले भाई सुशांत सिंह को याद कर भावुक हुईं श्वेता

बचपन की यादें की शेयर, इमोशनल पोस्ट वायरल

श्वेता सिंह कीर्ति ने रक्षाबंधन के मौके पर अपने दिवंगत भाई सुशांत सिंह राजपूत को बचपन की कुछ खास तस्वीरों और एक भावुक नोट के जरिए याद किया। उन्होंने उनके साथ खिलौने और मिठाइयां बांटने और भाई-बहन के अपने प्यारे रिश्ते को याद किया।

सुशांत सिंह राजपूत की बहन श्वेता सिंह कीर्ति ने रक्षाबंधन के मौके पर अपने दिवंगत भाई को एक भावुक पोस्ट के जरिए याद किया। उन्होंने बचपन की कुछ खास यादें और तस्वीरें शेयर कीं, पुरानी यादों को ताजा किया और भाई-बहन के बीच के खास रिश्ते को याद किया। श्वेता ने याद किया कि बचपन में सुशांत के साथ अपने खिलौने शेयर करके उन्हें कितनी खुशी मिलती थी। बचपन के दिनों को याद करते हुए उन्होंने बताया कि वह अपने पसंदीदा खिलौने, जैसे गुड़िया और छोटा किचन सेट, खुशी-खुशी भाई के साथ शेयर करती थीं। उन्हें भाई को इन खिलौनों से खेलते देखकर बहुत खुशी होती थी।

सुशांत सिंह राजपूत की बहन ने बचपन की यादें की शेयर

श्वेता ने यह भी माना कि मिठाइयों के मामले में बात थोड़ी अलग थी। चूंकि दोनों भाई-बहनों को मिठाइयां बहुत पसंद थीं, इसलिए वह इस बात का खास ध्यान रखती थीं कि दोनों को बिल्कुल बराबर हिस्सा मिले। रक्षाबंधन पर सुशांत को कलाकंद खिलाते हुए अपनी बचपन की एक तस्वीर शेयर करते हुए उन्होंने लिखा,मुझे आज भी वह दिन याद है...तुम्हारे साथ अपने सभी खिलौने शेयर करके मुझे कितनी खुशी होती थी। मेरी इकलौती गुड़िया,वह छोटा सा किचन सेट जो मुझे तोहफे में मिला था...तुम्हें उनसे खेलते और मजा करते देखकर मुझे और भी ज्यादा खुशी होती थी,लेकिन हां...जब बात मिठाइयों की आती थी जो हम दोनों को ही बहुत पसंद थीं तो मामला अलग होता था। मैं पक्का करना चाहती थी कि हम उन्हें बिल्कुल बराबर-बराबर बांटें। किसी को ज्यादा न मिले, किसी को कम न मिले। यह बिल्कुल बराबर होना चाहिए था!

अगले जन्म भी सुशांत सिंह की बहन बनाना चाहती हैं श्वेता

सुशांत सिंह राजपूत की बहन श्वेता ने आगे लिखा,इस तस्वीर में मेरा चेहरा देखो, जब मैं रक्षाबंधन पर भाई को कलाकंद खिला रही हूं। मुझे याद है कि मैं उसे बिल्कुल आधा हिस्सा देने को लेकर कितनी सतर्क रहती थी। बस उस भाव को देखो! मैं कितनी ध्यान से देख रही हूं कि कहीं वह बड़ा निवाला न ले ले। ये वो यादें हैं, जिन्हें मैं हमेशा अपने दिल के करीब रखूंगी। बहुत अनमोल यादें। श्वेता ने आगे कहा,वैसे भाई अगले जन्म में अगर मेरा जन्म हुआ तो तुम्हें मेरी बड़ी,प्यारी बहन का रोल निभाना होगा और मैं वो शरारती,प्यारी बच्ची बनूंगी जो तुम थे और अगर मैं अपनी जिंदगी के सबसे करीबी पलों में से किसी एक पल को हमेशा के लिए रोक सकती तो यह पल सबसे खास होता हम सब यहां हैं। साथ में। बिल्कुल वैसे ही जैसे हम थे। हमेशा के लिए एक बेहतरीन तस्वीर में कैद।भाई! तुम हमेशा भगवान की गोद में सुरक्षित रहो।

चिरंजीवी का बयानः इरुमुडी में रवि तेजा ने दी बेहद शानदार परफॉर्मेंस

तेलुगु स्टार चिरंजीवी ने एक्टर रवि तेजा और उनकी फिल्म इरुमुडी की पूरी टीम को फ़िल्मि की जबरदस्त सफलता के लिए दिल से बधाई दी। उन्होंने फ़िल्मि में रवि तेजा की परफ़ॉर्मेंस को शानदार बताया। अपने एक्स (ट्विटर) अकाउंट पर मेगा स्टार ने लिखा,मेरे प्यारे भाई रवि को इरुमुडी की ज़बरदस्त सफलता पर बहुत-बहुत बधाई। मैंने शुरू से आखिर तक फ़िल्मि का पूरा मज़ा लिया। क्या शानदार परफ़ॉर्मेंस थी आपने त्रिनाथ का किरदार पूरी तरह से अपने कंधों पर संभाला। तेलुगु फ़िल्म इंडस्ट्री के इस बड़े स्टार ने फ़िल्मि के डायरेक्टर शिवा निर्वाण और चाइल्ड आर्टिस्ट नक्षत्र की भी तारीफ़ की,जिन्होंने फ़िल्मि में रवि तेजा की बेटी का रोल निभाया था। उन्होंने लिखा,डायरेक्टर आपने फ़िल्मि को इतनी गहराई और इमोशन के साथ पेश करके बहुत बढ़िया काम किया है। उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद। पूरी कास्ट और क्रू को,और प्रोड्यूसर नवीन येरनेनी और रवि शंकर को इस शानदार सफलता के लिए मेरी तरफ़ से बहुत-बहुत बधाई। फिल्म बनाने वाली कंपनी, माइथ्री मूवी मेकर्स ने चिरंजीवी की बधाई वाली पोस्ट का तुरंत जवाब दिया। प्रोडक्शन हाउस ने कहा, ÷बहुत-बहुत धन्यवाद, मेगास्टार गारू। आपसे इतनी प्यारी तारीफ़ मिलना इरुमुडी की टीम के लिए बहुत बड़ी बात है। जो लोग नहीं जानते, उन्हें बता दें कि इरुमुडी एक ऐसी फ़िल्मि थी जिसमें भक्ति,फ़ैमिली ड्रामा और थ्रिलर का मिश्रण था। यह फ़िल्मि इस साल 21 अगस्त को दुनिया भर में रिलीज़ हुई थी। इस फ़िल्मि में प्रिया भवानी शंकर फीमेल लीड रोल में थीं और इसने बॉक्स ऑफ़िसि पर ज़बरदस्त कमाई की। 25 अगस्त को इरुमुडी की कमाई 100 करोड़ रुपये के पार पहुँच गई,जिससे यह इस साल तेलुगु सिनेमा की सबसे बड़ी सफल फ़िल्मों में से एक बन गई। यह रवि तेजा की 77 वीं फ़िल्मि थी। इरुमुडी नाम रखे जाने से पहले इसे अस्थायी रूप से कहा जा रहा था। इरुमुडी नाम का गहरा आध्यात्मिक महत्व है,क्योंकि यह भगवान अयप्पा के प्रति भक्त के पवित्र चढ़ावे और समर्पण का प्रतीक है।

खेल समाचार

कोलंबो टेस्ट ड्रॉ,अब डब्ल्यूटीसी पॉइंट्स टेबल में कहां खड़ा है भारत?

फाइनल की उम्मीदों को लगा तगड़ा झटका

कोलंबो,27 अगस्त 2026। भारत और श्रीलंका के बीच 2 मैचों की टेस्ट सीरीज का समापन हो गया है। कोलंबो में खेला गया दूसरा टेस्ट मैच ड्रॉ रहा। इस तरह भारतीय टीम टेस्ट सीरीज 1-0 से अपने नाम करने में सफल रही।

श्रीलंका दौरे से सीरीज जीतकर लौट रही टीम इंडिया के खाते में खुशी के साथ एक छोटी सी निराशा भी है। भारत ने दो टेस्ट मैचों की सीरीज 1-0 से अपने नाम तो कर ली, लेकिन फॉलोऑन खिलाने के बावजूद दूसरे टेस्ट में जीत हासिल नहीं कर सका। कोलंबो में खेले गए मुकाबले के ड्रॉ होने का सीधा असर भारत की वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप यानी डब्ल्यूटीसी पॉइंट्स टेबल पर भी पड़ा है।

दूसरी तरफ आखिरी टेस्ट में श्रीलंका के लिए सोनल दिनुशा सबसे बड़े हीरो बनकर उभरे। उन्होंने दोनों पारियों में शानदार शतक जड़ते हुए भारतीय टीम की जीत की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। दिनुशा ने पहली पारी में 162 गेंदों पर 103 रन बनाए, जबकि दूसरी पारी में 264 गेंदों का सामना करते हुए नाबाद 133 रन जड़े। श्रीलंका ने भारत के 503/9

घोषित के जवाब में पहली पारी में 290 रन बनाए थे। इसके बाद भारत ने मेजबान टीम को फॉलोऑन दिया, लेकिन दूसरी पारी में श्रीलंकाई बल्लेबाजों ने शानदार जुझारूपन दिखाया और टीम ने 429/9 पर पारी घोषित कर मैच ड्रॉ करा लिया। दिनुशा 1997 के बाद टेस्ट की दोनों पारियों में शतक लगाने वाले श्रीलंका के पहले बल्लेबाज भी बन गए।

भारतीय टीम किस पायदान पर?

अगर भारत को कोलंबो टेस्ट में जीत मिलती, तो टीम के खाते में 12 पॉइंट आते। इससे उसका पीसीटी बढ़कर 63.33 हो जाता और भारतीय टीम डब्ल्यूटीसी पॉइंट्स टेबल में चौथे स्थान पर पहुंच जाती। लेकिन मैच ड्रॉ होने के बाद भारत और श्रीलंका को 4-4 पॉइंट्स मिले। इस नतीजे के बाद भारत का पॉइंट्स प्रतिशत यानी पीसीटी 53.33 से घटकर 51.51 हो गया है। हालांकि, टीम इंडिया अभी भीडब्ल्यूटीसी पॉइंट्स टेबल में पांचवें स्थान पर बनी हुई है। दूसरी ओर, श्रीलंका का पॉइंट्स प्रतिशत 33.33 ही है और वह 9 टीमों की लिस्ट में छठे स्थान पर कायम है।डब्ल्यूटीसी फाइनल की दौड़ में ऑस्ट्रेलिया फिलहाल सबसे आगे है। बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे टेस्ट में बड़ी जीत के बाद उसका पॉइंट्स प्रतिशत 80 हो गया है। मौजूदा चैंपियन साउथ अफ्रीका 75 केडब्ल्यूटीसी के साथ दूसरे स्थान पर है। न्यूजीलैंड तीसरे और बांग्लादेश चौथे स्थान पर मौजूद है।

टीम इंडिया की फाइनल पर निगाहें

अब टीम इंडिया का फोकस व्हाईट बॉल सीरीज पर होगा। भारत का अगला टेस्ट नवंबर में न्यूजीलैंड दौरे के दौरान होगा। मौजूदा डब्ल्यूटीसी चक्र में भारत को अभी 7 टेस्ट खेलने हैं, जिनमें न्यूजीलैंड के खिलाफ दो और घरेलू मैदान पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच टेस्ट शामिल हैं। वहीं, श्रीलंका अपना अगला टेस्ट नवंबर में पाकिस्तान दौरे पर खेलेगा। उसके पास इस ड्ब्ल्यूटीसी चक्र में चार मुकाबले बाकी हैं, जिनमें पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के खिलाफ दो-दो टेस्ट शामिल हैं। भारत के लिए सीरीज जीत अहम जरूर रही, लेकिन डब्ल्यूटीसी फाइनल की राह में आगे बढ़ने के लिए आने वाले मुकाबलों में जीत का सिलसिला जारी रखना बेहद जरूरी होगा।

दिव्या देशमुख करेंगी ग्लोबल चेस लीग में डेब्यू

बेंगलुरु ,27 अगस्त 2026। भारतीय शतरंज स्टार दिव्या देशमुख 5 सितंबर को शुरू होने वाले ग्लोबल चेस लीग के चौथे सीज़न में मौजूदा चैंपियन अल्पाइन पाइपर्स के साथ अपना डेब्यू करेंगी। एक प्रेस रिलीज़ के अनुसार, 20 साल की दिव्या - जिन्हें हाल ही में अर्जुन अवॉर्ड मिला है - पाइपर्स की मज़बूत टीम में शामिल होंगी। इस टीम में दुनिया के नंबर 1 खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन, अनीश गिरी, विदित गुजराती और वोलोडार मुर्ज़िन भी शामिल हैं। ज़्यादातर व्यक्तिगत टूर्नामेंट में खेलने के बाद, देशमुख लीग के फ़्रैंचाइज़ी-आधारित टीम फ़ॉर्मेट में रैपिड चेस की चुनौती और घरेलू दर्शकों के सामने खेलने के मौके को लेकर उत्साहित हैं।देशमुख ने कहा, ÷यह मेरा डेब्यू है, इसलिए मैं निश्चित रूप से बहुत उत्साहित हूँ। यह किसी दूसरे शतरंज टूर्नामेंट जैसा नहीं है। इसमें बहुत सारे दर्शक होंगे, जो वाकई बहुत अच्छा होगा। और साथ ही, इसका फ़ॉर्मेट क्लासिकल इवेंट्स से काफ़ी अलग है, इसलिए यह मज़ेदार है। भारत में खेलना हमेशा मज़ेदार होता है।कार्लसन के साथ खेलने के मौके ने उनके डेब्यू को लेकर उत्साह और बढ़ा दिया है, लेकिन देशमुख ने कहा कि टीम की कुल मज़बूती भी उतनी ही रोमांचक है उन्होंने कहा...मुझे लगता है कि ऐसा टीममेट होना हमेशा बहुत अच्छा होता है जिसे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से एक माना जाता है। लेकिन मेरे लिए, मेरी टीम में सिर्फ़ मैग्नस ही नहीं हैं। कुल मिलाकर कई बेहतरीन खिलाड़ी हैं। अनीश हैं, विदित हैं और मुर्ज़िन भी हैं। तो,यह सिर्फ़ एक व्यक्ति के बारे में नहीं है। यह पूरी टीम के बारे में है। देशमुख ने कहा कि इस अनुभव से उन्हें क्या सीखने को मिलेगा,इसका आकलन करने से पहले वह इस फ़ॉर्मेट की ज़रूरतों को समझने की कोशिश करेंगी। उन्होंने कहा, अगर मैं इससे कुछ सीख पाती हूँ, तो यह इवेंट के बाद ही पता चलेगा। मैं अभी कुछ नहीं कह सकती। लेकिन हाँ, मैं इस फ़ॉर्मेट में खेलने के लिए बहुत उत्साहित हूँ। यह टूर्नामेंट बेंगलुरु में उनकी पहली सही यात्रा भी होगी। देशमुख ने कहा...मैं सिर्फ़ बेंगलुरु एयरपोर्ट तक ही गई हूँ। शहर में यह मेरी पहली यात्रा है। सीज़न 4 में लीग के मिक्स्ड-टीम फ़ॉर्मेट में छह ग्लोबल फ़्रैंचाइज़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले 36 प्रमुख खिलाड़ी शामिल होंगे।

गुजरात जेल विभाग ने जीती डीजीपी कप 2026-27 कुश्ती चैंपियनशिप

अहमदाबाद,27 अगस्त 2026। गुजरात जेल और सुधार प्रशासन विभाग ने नडियाद स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित ष्ठत्नक्क कप 2026-27 रेसलिंग क्लस्टर प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 13 मेडल जीते और चैंपियन ट्रॉफी अपने नाम की।एक विज्ञप्ति के अनुसार, इस प्रतियोगिता में पूरे गुजरात से कुल 22 टीमों ने हिस्सा लिया,जिसमें रेसलिंग, ग्रीको-रोमन रेसलिंग,आर्म रेसलिंग और बॉक्सिंग में कड़े मुकाबले देखने को मिले।गुजरात जेल और सुधार विभाग ने छह गोल्ड मेडल, छह सिल्वर मेडल और एक ब्रॉन्ज़ मेडल जीतकर मेडल टैली में दबदबा बनाया और ओवरऑल चैंपियनशिप का खिताब हासिल कर विभाग का नाम रोशन किया।

रेसलिंग में, गुजरात जेल और सुधार विभाग के खिलाड़ियों ने ज़बरदस्त प्रदर्शन किया। कैप्टन रघुभाई पटेल और दिव्या एस. चौहान ने गोल्ड मेडल जीते, जबकि तरुणसिंह वी. दहिया और नागाभाई आर. करंगिया ने सिल्वर मेडल हासिल किए। माहिरहसन एम. शेख ने भी रेसलिंग इवेंट में विभाग का प्रतिनिधित्व किया।ग्रीको-रोमन रेसलिंग में, महिपालसिंह डी. मोरी ने गोल्ड मेडल जीता, जबकि कैप्टन रघुभाई पटेल ने विभाग की टैली में एक सिल्वर मेडल और जोड़ा।

विभाग ने आर्म रेसलिंग में भी अपनी ताकत दिखाई,जिसमें तरुणसिंह विक्रमसिंह दहिया ने गोल्ड मेडल जीता। महमदमनसुर एम. मंसूरी, धर्मिष्ठाबेन डी. वाला और माहिरहसन एम. शेख ने सिल्वर मेडल हासिल किए, जबकि नागाभाई आर. करंगिया ने ब्रॉन्ज़ मेडल जीता। बॉक्सिंग में, निकुलभाई एस. ठाकोर ने गोल्ड मेडल जीता,जिससे विभाग की कुल मेडल टैली और मज़बूत हुई। इस ऐतिहासिक जीत पर टीम को बधाई देते हुए, ष्ठत्नक्क (जेल और सुधार सेवाएँ) डॉ. के.एल.एन. राव ने कहा, ÷यह शानदार जीत हमारे कर्मचारियों के समर्पण,अनुशासन और लगातार कड़ी मेहनत का सबूत है। कई कॉम्बैट स्पोर्ट्स में बेहतरीन प्रदर्शन करना और ओवरऑल चैंपियनशिप ट्रॉफी जीतना पूरे विभाग के लिए गर्व की बात है। मैं सभी मेडल विजेताओं और प्रतिभागियों को उनके शानदार खेल कौशल और शारीरिक उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। अलग-अलग खेलों में मिले-जुले प्रदर्शन ने गुजरात जेल और सुधार विभाग को डीजीपी कप 2026-27 रेसलिंग क्लस्टर चैंपियन ट्रॉफी जीतने में मदद की। यह उपलब्धि विभाग की ओर से अपने कर्मचारियों के बीच खेल और शारीरिक फिटनेस पर बढ़ते ज़ोर को दर्शाती है। राज्य-स्तरीय खेल प्रतियोगिता में इसके खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन ने गुजरात जेल विभाग को पहचान दिलाई है।

नाम परिवर्तन सूचना

मैं चन्द्रकांत सिंह आ0 नंदकिशोर सिंह, उम्र 35 वर्ष निवासी ग्राम घुटरापारा, अम्बिकापुर तह0 अम्बिकापुर जिला सरगुजा छ0ग0 । यह कि मेरी पुत्री प्रांशी पैकरा (PRANSHI PAIKRA) का जन्म संकल्प हॉस्पिटल अम्बिकापुर जिला सरगुजा छ0ग0 में दिनांक 02/04/2026 को हुआ है, जिसकी माता का नाम श्रीमती वर्षा (VARSHA) है । मेरी पुत्री के जन्म प्रमाण बन चुका है जिसमें त्रुटिवश मेरे पुत्री का नाम सिया पैकरा (SIYA PAIKRA) दर्ज हो गया है, जो गलत है, जिसका पंजीयन संख्या B 20262290075 0001806 तथा पंजीकरण दिनांक 13/04/2026 हैं । मेरी पुत्री के जन्म प्रमाण पत्र में मेरी पुत्री का सही नाम प्रांशी पैकरा (PRANSHI PAIKRA) दर्ज कराने हेतु स्वयं का शपथपत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ।

शपथग्रहिता
चन्द्रकांत सिंह

छत्तीसगढ़ में राज्य प्रशासनिक सेवा के 6 अधिकारियों का तबादला...

अंबिकापुर निगम आयुक्त देवनारायण कश्यप मंत्रालय भेजे गए,विनय कुमार अग्रवाल होंगे नए निगम आयुक्त

रायपुर,27 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ शासन के सामान्य प्रशासन विभाग ने राज्य प्रशासनिक सेवा के 6 वरिष्ठ अधिकारियों का प्रशासनिक आधार पर तबादला करते हुए नवीन पदस्थापना आदेश जारी किया है। 27 अगस्त 2026 को नवा रायपुर स्थित महानदी भवन से जारी आदेश में नगर निगम आयुक्त, अपर कलेक्टर, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी और छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग के परीक्षा नियंत्रक स्तर के पदों में बदलाव किया गया है। सभी अधिकारियों को आगामी आदेश तक नवीन पदस्थापना पर कार्यभार ग्रहण करने के निर्देश दिए गए हैं। इस फेरबदल का सीधा असर अंबिकापुर नगर निगम की प्रशासनिक व्यवस्था पर पड़ा है। वर्तमान निगम आयुक्त देवनारायण कश्यप को मंत्रालय में उप सचिव, नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं नारायणपुर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विनय कुमार अग्रवाल को अंबिकापुर नगर निगम का नया आयुक्त बनाया गया है।

अंबिकापुर निगम आयुक्त बदले

आदेश के अनुसार श्री देवनारायण कश्यप, राप्रसे, पी.-2010, प्रवर श्रेणी, जो वर्तमान में आयुक्त, नगर पालिक निगम अंबिकापुर के पद पर कार्यरत थे,उन्हें उप सचिव, छत्तीसगढ़ शासन,नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग,मंत्रालय पदस्थ किया गया है। वहीं श्री विनय कुमार अग्रवाल,राप्रसे, आर.आर.-2015,प्रवर श्रेणी, जो वर्तमान में मुख्य कार्यपालन अधिकारी,जिला पंचायत नारायणपुर के पद पर थे,उन्हें आयुक्त, नगर पालिक निगम अंबिकापुर (सरगुजा) की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस बदलाव के बाद अब अंबिकापुर नगर निगम की प्रशासनिक कमान विनय कुमार अग्रवाल के हाथों में होगी।

छह अधिकारियों की नई जिम्मेदारी

1. देवनारायण कश्यप, राप्रसे, पी.-2010
   वर्तमान पद : आयुक्त, नगर पालिक निगम अंबिकापुर
   नई पदस्थापना : उप सचिव, नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग, मंत्रालय।
2. चित्रकांत चाली ठाकुर, राप्रसे, आर.आर.-2014
   वर्तमान पद : अपर कलेक्टर, कोंडागांव
   नई पदस्थापना : मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत नारायणपुर।
3. दिप्ती गीते, राप्रसे, आर.आर.-2014
   वर्तमान पद : अपर कलेक्टर, बलौदाबाजार-भाटापारा
   नई पदस्थापना : परीक्षा नियंत्रक, छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग, नवा रायपुर अटल नगर।
4. श्री गुड्डू लाल जगत, राप्रसे, आर.आर.-2014
   वर्तमान पद : अपर कलेक्टर, बेमेतरा
   नई पदस्थापना : उप सचिव, छत्तीसगढ़ शासन, श्रम विभाग, मंत्रालय।
5. विनय कुमार अग्रवाल, राप्रसे, आर.आर.-2015
   वर्तमान पद : मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत नारायणपुर
   नई पदस्थापना : आयुक्त, नगर पालिक निगम अंबिकापुर (सरगुजा)।
6. डॉ. ऋतु वर्मा, राप्रसे, आर.आर.-2015
   वर्तमान पद : उप सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग (कक्ष-6 एवं 7), साथ ही परीक्षा नियंत्रक, छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग का अतिरिक्त प्रभार।
   नई स्थिति : परीक्षा नियंत्रक, छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग, नवा रायपुर अटल नगर के अतिरिक्त प्रभार से मुक्त,शेष पदस्थापना यथावत।

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग में भी महत्वपूर्ण बदलाव

तबादला आदेश में छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग से जुड़ी जिम्मेदारियों में भी बदलाव किया गया है। सुश्री दिप्ती गीते को परीक्षा नियंत्रक की जिम्मेदारी सौंपे जाने से आयोग की परीक्षा संबंधी प्रशासनिक व्यवस्था में भी परिवर्तन हुआ है। वहीं डॉ. ऋतु वर्मा को परीक्षा नियंत्रक के अतिरिक्त प्रभार से मुक्त किया गया है।

प्रशासनिक आधार पर तत्काल प्रभाव से आदेश

सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी आदेश में स्पष्ट किया गया है कि राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को प्रशासनिक आधार पर स्थानांतरित करते हुए उनके नाम के सामने दर्शाए गए पद एवं स्थान पर अस्थाई रूप से आगामी आदेश तक पदस्थ किया जाता है। इस फेरबदल में खास तौर पर अंबिकापुर नगर निगम और नारायणपुर जिला पंचायत के बीच अधिकारियों की अदला-बदली महत्वपूर्ण मानी जा रही है। अंबिकापुर को जहां नए निगम आयुक्त के रूप में विनय कुमार अग्रवाल मिलेंगे, वहीं वर्तमान आयुक्त देवनारायण कश्यप की मंत्रालय में नई जिम्मेदारी तय की गई है।

छत्तीसगढ़...18 निगम मंडल-आयोगों के पदाधिकारियों को मंत्री का दर्जा

रामलाल, रूप सिंह मंडावी और डॉ. ममता साहू को कैबिनेट रैंक,15 को राज्य मंत्री का दर्जा

रायपुर,27 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ सरकार ने अलग-अलग निगम, बोर्ड और आयोग के अध्यक्षों और उपाध्यक्षों को कैबिनेट मंत्री और राज्य मंत्री का दर्जा दिया है। इस संबंध में सामान्य प्रशासन विभाग ने आदेश जारी किया है। आदेश के मुताबिक, कुल 18 पदाधिकारियों को मंत्री का दर्जा दिया गया है। इनमें 3 को कैबिनेट मंत्री और 15 को राज्य मंत्री का दर्जा मिला है।

वहीं,अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष रूप सिंह मंडावी को पहले 29 अक्टूबर 2025 के आदेश में राज्य मंत्री का दर्जा दिया गया था। अब इस आदेश में बदलाव करते हुए उन्हें कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया गया है।

3 अध्यक्षों को कैबिनेट मंत्री का दर्जा

सरकार ने छत्तीसगढ़ राज्य अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष रामलाल चौहान, छत्तीसगढ़ राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष रूप सिंह मंडावी और छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. ममता साहू को कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया है।

15 को राज्य मंत्री का दर्जा

वहीं,सरकार ने 15 अन्य पदाधिकारियों को राज्य मंत्री का दर्जा दिया है। इनमें गौरिशंकर श्रीवास, आनंद निषाद,राजेश कुमार राजपूत, राजेंद्र नायक, सुधीर गौतम,एजाज मिर्जा बेग, भोजराज देवांगन, प्रभात मिश्रा, सुषमा जेठानी, शशिकांत द्विवेदी, डॉ. जेपी शर्मा, किशोर महानंद, आनंद कुमार तिवारी (राजीव लोचन दास महाराज), वेदराम मनहरे और मंगल दास ठाकुर शामिल हैं। इनमें निगम-मंडलों और आयोगों के अध्यक्षों के साथ कुछ उपाध्यक्ष भी शामिल हैं।

27 अगस्त से लागू होगा आदेश

सरकार ने कहा है कि इस सूची से किसी की वरिष्ठता या प्रोटोकॉल तय नहीं होता। यह नया आदेश 27 अगस्त 2026 से लागू होगा।

टीईटी को लेकर मानी गई शिक्षकों की बड़ी मांग! छत्तीसगढ़ में अब साल में 3 बार होगी परीक्षा

रायपुर,27 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ शिक्षक संघर्ष मोर्चा के साथ बैठक में शिक्षा मंत्री ने विभागीय टीईटी आयोजित कराने पर सहमति जताई है। सेवारत शिक्षकों के लिए साल में तीन बार विभागीय शिक्षक पात्रता परीक्षा कराने पर सहमति बनी है। यह परीक्षा सामान्य टीईटी से अलग होगी और शिक्षा विभाग अपने स्तर पर इसका आयोजन करेगा। बैठक में शिक्षा मंत्री ने कहा कि सरकार शिक्षकों की सेवा सुरक्षा को लेकर प्रतिबद्ध है और सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय योग्यता के दायरे में शिक्षकों को लाने के लिए विभागीय परीक्षा आयोजित कराने की दिशा में आगे बढ़ेगी।

विभागीय टीईटी में साल में तीन मौके

बैठक में सेवारत शिक्षकों के लिए वर्ष में तीन बार विभागीय टीईटी आयोजित करने पर सहमति बनी। शिक्षक पात्रता परीक्षा अब तक व्यापम के माध्यम से आयोजित होती रही है। प्रस्तावित विभागीय टीईटी का आयोजन शिक्षा विभाग की ओर से अलग से किया जाएगा। परीक्षा केंद्र शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को बनाए जाने का सुझाव भी दिया गया है। वहीं न्यूनतम उत्तीर्णांक 33 अंक रखने का सुझाव दिया गया है।

शिक्षकों की पदोन्नति और पुरानी पेंशन पर भी चर्चा : बैठक में शिक्षकों की अन्य मांगों पर भी चर्चा हुई। शिक्षक संघ के अनुसार,पूर्व नियमों के आधार पर वेटिंग लिस्ट से प्राचार्य पदोन्नति देने पर सहमति व्यक्त की गई है। इसके अलावा ई-संवर्ग के व्याख्याताओं की पदोन्नति और प्रधान पाठक के पद पर वरिष्ठता के आधार पर पदोन्नति का रास्ता निकालने पर भी चर्चा हुई। शिक्षक संघ ने प्रथम नियुक्ति तिथि से सेवा गणना कर पुरानी पेंशन का लाभ देने की मांग भी रखी। शिक्षक एलबी संवर्ग को सभी प्रकार के देय लाभ देने और शिक्षक संवर्ग में वेतन विसंगति दूर करने की मांग भी बैठक में उठाई गई।

2028 तक टीईटी पास करने का समय : सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद शिक्षकों के लिए शिक्षक पात्रता परीक्षा अनिवार्य की गई है। शिक्षकों को निर्धारित योग्यता हासिल करने के लिए 2028 तक का समय दिया गया है। इसी के मद्देनजर सीबीएसई ने 6 सितंबर को प्रस्तावित शिक्षक पात्रता परीक्षा स्थगित कर दी है। अब परीक्षा के लिए दोबारा आवेदन मंगाए जा रहे हैं। नई परीक्षा तिथि बाद में घोषित की जाएगी। मध्य प्रदेश ने भी शिक्षकों को अधिक अवसर देने के लिए साल में तीन बार टीईटी आयोजित करने का निर्णय लिया है।

25 अगस्त को निकाली थी टीईटी मुक्ति रैली : शिक्षकों ने 25 अगस्त को प्रदेश के सभी जिलों में टीईटी मुक्ति रैली निकाली थी। इस दौरान प्रदेशभर के शासकीय विद्यालयों में पढ़ाई प्रभावित रही। अब शिक्षा मंत्री से मिले आश्वासन के बाद शिक्षक संघर्ष मोर्चा ने विरोध प्रदर्शन और हड़ताल को फिलहाल स्थगित कर दिया है।

'विष्णु भैया' ने बहनों के बीच केरसई को दी विकास की नई सौगातें...

बहनों का सम्मान,सशक्तिकरण और खुशहाली से बनेगा विकसित छत्तीसगढ़ : सीएम विष्णु देव साय

रायपुर,27 अगस्त 2026। रक्षाबंधन के पावन अवसर पर जशपुर जिले के फरसाबहार विकासखंड के ग्राम केरसई में भाई-बहन के स्नेह, विश्वास और आत्मीयता का भावपूर्ण दृश्य देखने को मिला। यहां आयोजित 'रक्षाबंधन एवं बहनों से संवाद' कार्यक्रम में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के पहुंचने पर क्षेत्र की बहनों ने बड़े उत्साह और आत्मीयता के साथ उनका स्वागत किया और उनकी कलाई पर राखी बांधी। बहनों के स्नेह से अभिभूत मुख्यमंत्री ने उनसे आत्मीय संवाद किया, उनकी बातें सुनीं और सभी को रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के स्नेह का पर्व नहीं,बल्कि विश्वास, सम्मान और सुरक्षा के संकल्प का भी पर्व है। जब बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती है तो वह धागा जीवन भर उसके सम्मान और सुख-दुःख में साथ खड़े रहने की जिम्मेदारी से जोड़ देता है। प्रदेश की माताओं और बहनों का स्नेह तथा आशीर्वाद मिलना उनके लिए सौभाग्य की बात है। मुख्यमंत्री ने बहनों से कहा कि 'आपने मुझे जो स्नेह और विश्वास दिया है, उसे बनाए रखना मेरा दायित्व है। मेरा फर्ज है कि आपका और क्षेत्र की जनता का सिर हमेशा ऊंचा रहे तथा विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।' उन्होंने कहा कि माताओं-बहनों के सम्मान, सशक्तिकरण और खुशहाली से ही परिवार मजबूत होगा और मजबूत परिवारों से विकसित छत्तीसगढ़ का निर्माण होगा।

महिला राशक्तिकरण से बदल रही छत्तीसगढ़ की तस्वीर

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि सरकार की नीतियों के केंद्र में माताओं और बहनों का सम्मान, आर्थिक स्वावलंबन और खुशहाली है। आज प्रदेश में 13 लाख 85 हजार से अधिक महिलाएं लखपति दीदी बन चुकी हैं। स्व-सहायता समूहों से जुड़कर महिलाएं न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर रही हैं, बल्कि गांवों की अर्थव्यवस्था को भी नई शक्ति दे रही हैं। उन्होंने कहा कि महतारी वंदन योजना के माध्यम से प्रदेश की लगभग 68 लाख बहनों को हर महीने आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। बहनें इस राशि का उपयोग अपनी छोटी-बड़ी जरूरतों, बच्चों की पढ़ाई तथा सिलाई-कढ़ाई और अन्य आजीविका गतिविधियों के लिए कर रही हैं। यह आर्थिक संबल महिलाओं के आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता को भी मजबूत कर रहा है। मुख्यमंत्री ने ड्रोन दीदियों का उदाहरण देते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ की महिलाएं अब आधुनिक तकनीक से भी जुड़ रही हैं और इसके माध्यम से आय के नए अवसर प्राप्त कर रही हैं। जशपुर जिले की बहनों को 50 ई-रिक्शा प्रदान किए जाने से उनके लिए स्वरोजगार और आर्थिक आत्मनिर्भरता की नई राह खुलेगी। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि गांव की प्रत्येक महिला को उसकी रुचि और क्षमता के अनुरूप आजीविका का अवसर मिले।

केरसई को मिली विकास की अनेक सौगातें : रक्षाबंधन के अवसर पर मुख्यमंत्री साय ने क्षेत्रवासियों की मांगों को आत्मीयता से स्वीकार करते हुए अनेक विकास कार्यों की घोषणा की। उन्होंने घासीमुंडा में जर्जर प्राथमिक शाला के स्थान पर नया शाला भवन, केरसई तालाब का सौंदर्यीकरण, केरसई में मिनी स्टेडियम, केरसई एवं घासीमुंडा के बजरंग बली मंदिरों का जीर्णोद्धार, मुख्य मार्ग से अरुण के घर तक सीसी सड़क, ग्राम पंचायत कोहपानी के गढ़वामुड़ा यादव बस्ती में सामुदायिक भवन, घासीमुंडा में सामुदायिक भवन तथा ग्राम ऊपरकछार में महतारी सदन बनाने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने केरसई में लगभग 84.69 लाख रुपए के विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमिपूजन का उल्लेख करते हुए कहा कि राज्य सरकार गांवों में सड़क, पुल-पुलिया, स्कूल, सामुदायिक भवन सहित सभी आवश्यक अधोसंरचनाओं का तेजी से विस्तार कर रही है। विकास कार्यों में ग्रामीण क्षेत्रों की जरूरतों को प्राथमिकता दी जा रही है और आने वाले समय में भी क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप विकास कार्य निरंतर स्वीकृत किए जाएंगे।

किसान, गरीब और हर जरूरतमंद परिवार के साथ सरकार : मुख्यमंत्री साय ने कहा कि राज्य सरकार किसानों की समृद्धि के लिए भी प्रतिबद्ध है। प्रदेश में किसानों से 3,100 रुपए प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी की जा रही है। किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए लगातार कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि गरीब परिवारों के लिए बड़ी संख्या में पक्के मकानों का निर्माण किया जा रहा है। सरकार का संकल्प है कि कोई भी पात्र परिवार आवास जैसी बुनियादी सुविधा से वंचित न रहे। गरीब परिवार का अपना पक्का घर केवल एक भवन नहीं, बल्कि उसके सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन का आधार है।

राखी पर शराब पार्टी! रायपुर के द बियर कैफे में 28 अगस्त को भाई-बहन के लिए फ्री एंट्री बजरंग दल ने दी चेतावनी...हुई तो करेंगे कार्रवाई

रायपुर,27 अगस्त 2026। रक्षाबंधन जैसे पवित्र त्योहार पर शराब पार्टी का आयोजन विवादों में आ गया है। राजधानी रायपुर के द बियर कैफे में शुक्रवार 28 अगस्त को भाई-बहन के लिए नाइट पार्टी रखी गई है, जिसका मैसेज और पोस्टर सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। शहरऔर स्थानीय मार्गदर्शिका इस कथित शराब पार्टी का सोशल मीडिया पर पोस्टर वायरल हो रहा है। इसकी फाइंड यूअर वाइब डॉट इन पर बुकिंग हो रही है, रक्षाबंधन को शराब के साथ सेलिब्रेट करने के आयोजन पर बवाल मचने लगा है। छत्तीसगढ़ बजरंग दल ने कहा है कि घटिया पार्टी बर्दाश्त नहीं होगी और आयोजक था क्लब जिम्मेदार होंगे वायरल मैसेज के मुताबिक 28 अगस्त शुक्रवार को द बियर कैफे में नाइट पार्टी का आयोजन है। केवल भाई-बहनों को फ्री बुकिंग पर ही प्रवेश मिलेगा। बुकिंग फाइंड यूअर वाइब डॉट इन पर करनी होगी। शाम 7-8 बजे वन प्लस वन शराब के पैग, उसके बाद कराओके पर गाने का अवसर होगा। पोस्टर में इस रक्षाबंधन / राखी त्योहार को शराब के साथ सेलिब्रेट करने की बात लिखी है।

बजरंग दल का विरोध,दी सीधी चेतावनी

इस आयोजन पर छत्तीसगढ़ बजरंग दल ने कड़ा विरोध जताया है। दल ने चेतावनी दी है कि अगर रक्षाबंधन के दिन कल यह घटिया पार्टी हुई तो दल अपने हिसाब से कार्रवाई करेगा और उसका जिम्मेदार पार्टी आयोजक और क्लब वाले दोनों होंगे।'बजरंग दल का कहना है कि भाई-बहन के पवित्र रिश्ते के त्योहार को शराब पार्टी के नाम पर बदनाम किया जा रहा है। जो उचित नहीं है।

छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट का बड़ा फैसला...मिसकैरेज का अवकाश मातृत्व छुट्टी में नहीं होगा एडजस्ट

रायपुर,27 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने महिला कर्मचारियों के मातृत्व अधिकारों को लेकर अहम फैसला सुनाया है। कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि मिसकैरेज के दौरान लिया गया अवकाश बाद की गर्भावस्था के मातृत्व अवकाश में समायोजित नहीं किया जा सकता। केवल लीव बैलेंस कम होने के आधार पर भी किसी महिला कर्मचारी को मातृत्व लाभ से वंचित नहीं किया जा सकता। चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा और जस्टिस रविंद्र कुमार अग्रवाल की डिवीजन बेंच ने फूड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया की अपील खारिज करते हुए सिंगल बेंच के आदेश को बरकरार रखा। मामला एफसीआई के रायपुर जिला कार्यालय में असिस्टेंट ग्रेड-2 के पद पर कार्यरत एक महिला कर्मचारी से जुड़ा है।

मिसकैरेज के बाद हाई रिस्क प्रेग्नेंसी

महिला कर्मचारी वर्ष 2019 में जुड़वा बच्चों की गर्भवती थीं। 25 अप्रैल को मेडिकल जटिलता के कारण उनका मिसकैरेज हो गया। इसके बाद दूसरे भ्रूण की गर्भावस्था को हाई रिस्क बताते हुए डॉक्टरों ने उन्हें लंबे समय तक बेड रेस्ट की सलाह दी। 3 सितंबर 2019 को महिला कर्मचारी ने बच्ची को जन्म दिया। इसके बाद एफसीआई ने उनके 68 दिनों के अवकाश को एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी लीव मान लिया। इस अवधि का वेतन नहीं दिया गया और 80,254 रुपए की कटौती की गई।

80 हजार रुपए की कटौती लौटाने का आदेश : मामले में सिंगल बेंच ने 13 मई 2026 को महिला कर्मचारी को मिसकैरेज और मातृत्व अवकाश के कुल 90 दिन का लाभ देने का आदेश दिया था। साथ ही वेतन से काटी गई 80,254 रुपए की राशि वापस करने के निर्देश दिए थे। मेडिकल खर्च की प्रतिपूर्ति के मामले में कोर्ट ने एफसीआई को संबंधित नियमों के तहत दोबारा निर्णय लेने को कहा था। एफसीआई ने इस आदेश के खिलाफ डिवीजन बेंच में अपील की थी, जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया।

मातृत्व लाभ को तकनीकी आधार पर नहीं रोका जा सकता : डिवीजन बेंच ने कहा कि मातृत्व लाभ का उद्देश्य महिला कर्मचारी के स्वास्थ्य, सम्मान और कल्याण की रक्षा करना है। ऐसे लाभों को केवल तकनीकी आधार पर समाप्त नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि पर्याप्त लीव बैलेंस नहीं होने के आधार पर मातृत्व लाभ रोकना उचित नहीं है। मेडिकल बिलों की जांच के बाद एफसीआई को नियमानुसार नए सिरे से निर्णय लेने के निर्देश दिए गए हैं।

बाल संप्रेक्षण गृहों की सुरक्षा पर हाईकोर्ट सख्त,सरकार ने बताया रिटायर्ड फौजी संभालेंगे सुरक्षा

बिलासपुर, 27 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ में बाल देखरेख संस्थानों और बाल संप्रेक्षण गृहों की सुरक्षा पर हाईकोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा और जस्टिस रविंद्र कुमार अग्रवाल की डिवीजन बेंच ने राज्य सरकार से सुरक्षा इंतजामों का पूरा ब्योरा और केंद्र सरकार से आर्थिक सहायता के अधिकार क्षेत्र पर जवाब मांगा है। महिला एवं बहाल विकास विभाग ने बताया है कि बाल संप्रेक्षण गृहों में रिटायर्ड फौजी तैनात किये जायेंगे। जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त मुख्य सचिव ने शपथपत्र प्रस्तुत किया। सरकार ने 26 बाल देखभाल संस्थानों में 156 सुरक्षा गार्ड तैनात करने का प्रस्ताव रखा है। महासमुंद के बाल देखभाल संस्थान से फरार आठ किशोरों में से पांच को बरामद किया जा चुका है।

दफ्तर पहुंचते ही महापौर की कार में लगी भीषण आग,अलका बाघमार बाल-बाल बचीं

दुर्ग, 27 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में उस वक्त हड़कंप मच गया, जब महापौर अलका बाघमार की कार में अचानक आग भड़क उठी। बताया जा रहा है कि महापौर जैसे ही वाहन से उतरकर कार्यालय की ओर गईं, कुछ ही देर बाद कार धू-धूकर जलने लगी। गनीमत रही कि हादसे के समय महापौर वाहन में मौजूद नहीं थीं। कार से अचानक धुआं निकलने के बाद देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया। वाहन से उठती ऊंची लपटों को देखकर मौके पर मौजूद लोगों में अफरा-तफरी मच गई। तत्काल पुलिस और फायर ब्रिगेड को घटना की सूचना दी गई। सूचना मिलते ही दमकल टीम मौके पर पहुंची और काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह*(पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)